ओमशान्ति मीडिया

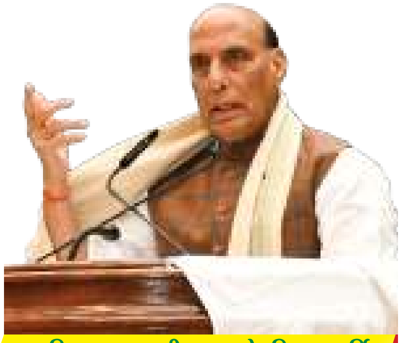

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27 | जून-I-2025 | अंक - 05 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सैनिकों के लिए 'आत्म सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण' कार्यक्रम के लॉंचिंग अवसर पर

यहाँ आध्यात्मिक प्रकंपन से चार्ज चुम्बकीय वातावरण: सिंह

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शान्तिवन में सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा शुरू किए जा रहे देशव्यापी 'स्व सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण(सेल्फ एम्पॉवरमेंट)' कैंपेन की दीप प्रज्वलन कर लॉन्चिंग की। साथ ही पांच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह को सम्बोधित किया। इसमें देशभर से 400 सेना के अधिकारी और जवानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में राजस्थान के तीन मंत्री केके विश्नोई, जोराराम कुमावत और ओटाराम देवासी विशेष रूप से मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सुरक्षा पर बोले सिंह

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने 42 मिनट के अपने सम्बोधन में योग से लेकर अध्यात्म, सेना, भारतीय अर्थव्यवस्था और सेल्फ एम्पॉवरमेंट पर बात की। उन्होंने कहा कि आज भारत राष्ट्र के रूप में चारों ओर से सुरक्षित है। जो यहां बैठे हुए लोग हैं, इनके कारण भारत सुरक्षित है। दुनियाभर में तमाम अनिश्चितताओं के बावजूद आज भारत प्रगति कर रहा है। हमारे सिक्योरिटी फोर्स जवान सीमाओं पर महीनों गुजार जाते हैं, परिवार से कोई संपर्क नहीं हो पाता है। एक सैनिक के लिए फिज़िकल

दुनिया की पल-पल की खबरें पता चल रही हैं लेकिन हमें यह पता नहीं चल रहा कि हमारे भीतर क्या चल रहा है। हम पूरी दुनिया की खबर रखते हैं लेकिन अपनी खबर नहीं रखते हैं। मंत्री महोदय ने कहा

लेकिन आज भारत का कद और सिर इतना ऊंचा हो गया है कि भारत जब बोलता है तो पूरी दुनिया कान लगाकर सुनती है। लोग कहते थे कि यह गरीबों-भिखारियों का देश है। दो साल के बाद भारत अर्थ व्यवस्था के

दुनिया में फिलहाल इस तरह की स्थितियां हैं। इसलिए यह थीम और भी प्रासंगिक हो जाती है। यह कैंपेन राष्ट्र को और मजबूत करेगा। जो भारतभर में सूर्यवीर बैठे हैं उनको आत्मिक शक्ति देगा। उनका यहाँ आने पर आत्म रूपांतरण होगा। आत्म रूपांतरण बीज है और राष्ट्रीय रूपांतरण उसका फल है। आत्म रूपांतरण करने का यह अभियान- योग, सकारात्मक चिंतन और आत्म संवाद के माध्यम से हमारे वीर जवानों को मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक बल देगा। मैं इसके लिए शीश झुकाकर आपका अभिनन्दन करता हूँ।

यहाँ आध्यात्मिक तरंगें तैर रही हैं जिससे मनुष्य का अहंकार शून्य हो जाता

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि यहाँ ब्रह्माकुमारीज़ ने राजयोग साधना के माध्यम से ऊर्जा की तरंगों को फैलाया है। यह मैं सहज अनुभव कर सकता हूँ। यहाँ अद्भुत वायब्रेशन हैं। यहाँ आध्यात्मिक तरंगें तैर रही हैं। यहाँ मंत्री, सांसद सभी के साथ मिलकर जनता के बीच बैठे हैं। यहाँ आकर हर कोई का अहंकार शून्य हो जाता है। मनुष्य अपने जीवन में अलंकारों से अलंकृत नहीं हो सकता है। मनुष्य अपने जीवन में अपनी कृतियों के कारण ही अलंकृत हो सकता है। इस दुनिया में ऐसे कई लोग हैं जोकि कभी मंदिर नहीं जाते, पूजा-पाठ नहीं करते, मस्जिद नहीं जाते, इबादत नहीं करते हैं फिर भी बड़े मन के लोग हैं। मनुष्य का मन जैसे-जैसे बड़ा होता चला जाता है, वैसे-वैसे वह आध्यात्मिक ऊंचाईयों को हासिल करता जाता है। आत्मा एक सर्कल है, जैसे-जैसे मन का सर्कल(परिधि) बढ़ाते जायेंगे तो आपको सुख, शान्ति और आनन्द की अनुभूति होती चली जाएगी। इस सृष्टि का संचालन करने वाली जो सत्ता है उसकी प्राप्ति होती है।

राजयोगिनी ब्र.कु. रतनमोहिनी दादी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। जिन्होंने योग, तपस्या, साधना से लाखों लोगों का जीवन बदला है। इसके पहले मैं गृहमंत्री रहते हुए यहाँ आया था, उनके सानिध्य और दर्शन का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

रक्षामंत्री की मौजूदगी में ब्रह्माकुमारीज़ और भारतीय सेना के बीच एमओयू

सेना के साथ साइन किया एमओयू

रक्षामंत्री की मौजूदगी में ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग और भारतीय सेना के बीच एक एमओयू साइन किया गया। इसके तहत सुरक्षा सेवा प्रभाग के देशभर के सेवानिवृत अधिकारी और जवानों के लिए हर माह सेल्फ एम्पॉवरमेंट प्रोग्राम चलाएगा। एमओयू में विशेष रूप से प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, राष्ट्रीय संयोजक कर्नल बीसी सती सिंह, इंडियन नेवी रिटायर वाइस एडमिरल सतीश सिंह घोरमड़े की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

एमओयू में क्या-क्या होगा खास

एमओयू के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग एक्सपर्ट, सेना के सेवानिवृत अधिकारी और जवानों को राजयोग मेडिटेशन, माइंड मैनेजमेंट, स्ट्रेस मैनेजमेंट, टाइम मैनेजमेंट, स्लीप मैनेजमेंट, लाइफ मैनेजमेंट, सेल्फ मैनेजमेंट की कला सिखायेंगे। खासकर सेवानिवृत जवानों को हर माह मोटिवेशनल क्लासेज़ के माध्यम से मानसिक, भावनात्मक स्तर पर मजबूत बनाने का प्रयास किया जाएगा ताकि वह प्रसन्नता और स्वस्थ रहकर जीवनयापन कर सकें।

स्ट्रेन्थ के साथ-साथ मेन्टल स्ट्रेन्थ भी चाहिए होती है। क्योंकि वे सैनिक घने जंगलों से लेकर ग्लेशियर के बीच लड़ाईयां लड़ते हैं। सैनिक का विपरीत परिस्थितियों में सेवा करने के कारण मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ का सैनिक के कल्याण के लिए आगे आना सराहनीय कदम है। उन्होंने आगे कहा कि आज एआई का दौर चल रहा है। हमें देश-

कि हम बाहरी दुनिया से तो जुड़ जाते हैं लेकिन अपने आप से नहीं जुड़ पाते हैं।

आज भारत की बात दुनिया ध्यान से सुनती

रक्षामंत्री सिंह ने कहा कि वर्षों पहले दुनिया के देशों में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर यदि कोई जाकर बोलता था तो भारत की बातों को उतनी गंभीरतापूर्वक नहीं लिया जाता था।

आकार के मामले में दुनिया में टॉप 3 देशों में शामिल हो जाएगा।

आत्म सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण की नींव होगी मजबूत

सेल्फ एम्पॉवरमेंट कैंपेन पर रक्षामंत्री सिंह ने कहा कि यह अभियान की जो थीम है- 'आत्म सशक्तिकरण से राष्ट्र सशक्तिकरण' अपने आप में बेहद इन्ट्रस्टिंग है। पूरी

भारतीय संस्कृति विश्व भर में पहुंचाई

रक्षामंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ने निःस्वार्थ भाव से पूरी मानवता के आध्यात्मिक विकास और आत्मिक बल बढ़ाने के लिए कार्य किया है। माउंट आबू की चोटी पर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ का यह सुन्दर-सा आध्यात्मिक केन्द्र है, जिसकी यह अनुभूति मानव तक पहुंचती है। मैं संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका

साधक और सैनिक दोनों करते हैं सेवा

साधक और सैनिक की तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि हर साधक के अन्दर एक सैनिक मौजूद रहता है और सैनिक के अन्दर भी एक साधक मौजूद रहता है। दोनों का लक्ष्य मानवता की सेवा करना ही है। सीमा पर जो सैनिक हमारी सुरक्षा कर रहे हैं वह योग साधना का ही एक रूप है।

-शेष पेज 3 पर...

समय के महत्व को न जानने से होंगे उनके शिकार

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

समय आ गया है, समय ने करवट बदल दी है जिसका इन्तज़ार हमें युगों से था, हम परिवर्तन चाहते थे। ये हमारी आँखों के सामने फास्ट गति से हरपल परिस्थिति, स्वस्थिति का बदलाव नज़र आ रहा है। प्रकृति ने भी हमें बहुत कुछ दिया है, हमें उसे लौटाना है, उसको भी स्वच्छ करना है। इस प्रकृति ने हमें जन्म दिया, शरीर की पालना भी की और बहुत सुख भी दिया, विशुद्ध पवन, विशुद्ध जल, स्वच्छ आकाश, अग्नि भी दिया तो बहुत तेज नहीं आरामदायक। यह सब प्रकृति ने हमें सुख देकर हमारी पालना की है। हम उनका हृदय से शुक्रिया करें, रोज़ शुक्रिया अदा करें। तो सबकुछ परिवर्तन हो रहा है, तो हमें भी परिवर्तन करना है। चेंज को स्वीकार करना है। जिन्होंने परमात्मा के महापरिवर्तन के कार्य में बहुत मदद की है उन्हें प्रकृति भी साथ देगी और साथ दे भी रही है।

हम समय अनुसार ज़रा विचार करें, हमें स्वयं में क्या चेंज लानी है, चेंज अवश्य लानी है। परमात्मा हमें कहा करते थे वो सब बातें हमें याद आती हैं। बाबा कहते थे समय नाजुक आएगा, चारों ओर विकारों की आग तेजी से फैलेगी। ऐसे में किसी के अन्दर भी दबा हुआ, छिपा हुआ विकार का अंश होगा तो वो भी वंश पैदा कर देगा। वो अंश के वंश में बदल जाएगा, वो छोटे से बड़े में बदल जाएगा और मनुष्य को काफी परेशान करेगा। जैसे आजकल बहुतों के सामने बातें आ रही हैं कि क्रोध बहुत आ रहा है, बिना मतलब आ रहा है। क्योंकि घर में रहे हैं तो क्रोध का विस्तार बहुत हुआ है। वो दबा हुआ, छिपा हुआ अंश भी वंश का रूप ले लेता है। जो विकारों का बीज हमारे अन्दर है अगर उस बीज को हमने खत्म नहीं किया तो जागृत हो जाएगा, क्योंकि वातावरण मिलने पर वो पल्लवित होता है।

तो हम बहुत ध्यान दें कि हम विकारों से स्वयं को पूर्ण रूप से मुक्त करें। बहुत समय से हमें अलबेलेपन में चलने की आदत हो गई है, हम ढ़ीले हुए हैं, कई तो संशय में भी चल रहे हैं, धारणाएं कईयों की ढ़ीली पड़ी हैं। ये तो बहुत बड़ी गलती हुई। उन्हें सचेत होना है, जागृत होना है। कई पुरूषार्थी बच्चे बहुत तीव्र गति से आगे भी बढ़ रहे हैं और दूसरी ओर कई बच्चे अपने आप को अलबेलेपन में समय को यूं ही गंवा रहे हैं। बहुतों ने कारणे-अकारणे हार खा चुके हैं। हमें हार नहीं खाना है, विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

हमें स्वयं भगवान ने चुना है इस भागीरथ महापरिवर्तन के कार्य के लिए। भगवान के हम बच्चे हैं, जिन्हों को भगवान साथ दे रहा हो! जिसकी पालना स्वयं भगवान कर रहा हो! जिसको गाइडेन्स भगवान से मिल रही हो! क्या वो माया से हार खा सकते हैं! क्या वो जीत नहीं सकते! हम नहीं जीत सकेंगे तो भला और कौन जीत सकेगा!

कई कहते हैं कि हमें तो मालूम है ना कि हम आत्मा हैं, भगवान भी है ये ज्ञान तो हममें है। लेकिन हमने देखा है कि भक्त-सन्यासी बहुत माया से हार खाते रहे हैं, अनेक धर्मों में भी यही हुआ है। उसका कारण एक ही था कि माया से जीतने की यथार्थ विधि नहीं थी। केवल माया को जीतना है, विकारों को छोड़ना है, अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय पानी है, उन्हें शीतल करना है यह कहने से काम तो नहीं चलेगा ना! उसकी प्रॉपर विधि भी हमारे पास होनी चाहिए। विधि के बिना सिद्धि नहीं होती। इसीलिए परमात्मा ने हमें पहली विधि बताई है कि- 'अपने को आत्मा समझ मेरे साथ सम्बन्ध जोड़ना है।'

बहुतों ने कहा हमें ज्ञान तो मिल गया लेकिन हम उसे समझे भी ना! अगर आपको कहीं जाना है रास्ते में प्रकाश हो लेकिन आपकी टॉंग ही चलती नहीं, आपकी बाइक में आज तेल नहीं है, आपके पास साधन हैं और तेल नहीं है तो साधन होते हुए भी आप कैसे पहुंचेंगे! तो ये बहुत बड़ी त्रासदी हुई ना! आत्मा का ज्ञान होने पर भी, आत्म-अभिमानी की प्रैक्टिस नहीं हुई। इसीलिए समस्याओं में हम गिरते रहे। बहुत लोग आध्यात्मिक जागृति के अभाव में खुद को खाली महसूस कर रहे हैं, अब हमें उसे भरना होगा। क्योंकि समय की डिमांड यही है कि हम निर्भय बनें और यथार्थ विधि को अपनायें, अपने को भरपूर करें। तब ही हम समय की चुनौतियों को चैलेन्ज कर सकेंगे, चेंज कर सकेंगे।

अभी समस्या आयेगी तो क्या करेंगे...?

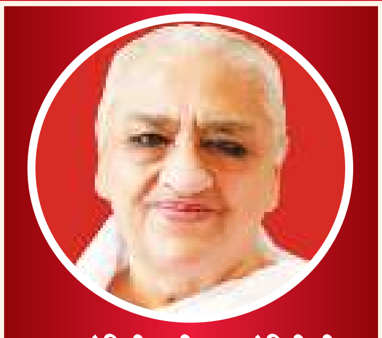
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जिस समय भी परमात्मा को याद करो, कई भाई-बहनें शिकायत करते हैं कि जब हम परमात्मा की याद में बैठते हैं तो और ही ज़्यादा और-और संकल्प आते हैं, परमात्मा तो याद आता ही नहीं है। क्यों नहीं आता है? जब परमात्मा हमारा पिता है, पिता हमारे लिए बंधा हुआ है, क्यों नहीं आता है याद? आना चाहिए ना! लेकिन गलती हमारी ये है, मानो आपका कोई बाप है, उसको आप कहते हो पिता जी, तो आपकी सुनेगा ना! अगर दूसरे को आप कह दो कि पिता जी, पिता जी वो सुनेगा? सुनेगा? वो आपको जवाब देगा? आप कितना भी आधा घंटा बोलते रहो, पिता जी, पिता जी वो पिता जी है ही नहीं तो सुनेगा कैसे? तो हमारी गलती ये होती है कि हम आत्मा बनकर परमात्मा को याद नहीं करते, बॉडी कॉन्शियस में रह करके परमात्मा को कहते हैं पिता जी, तो वो सुनेगा क्यों? वो बॉडी का पिता है ही नहीं। आपके बॉडी का पिता अलग है ना। हम पूछेंगे आपके पिता का नाम क्या है? तो अलग-अलग होता है या दो-तीन भाई होंगे तो एक होगा। तो परमात्मा क्यों नहीं सुनता? क्यों नहीं मदद देता है? क्योंकि हमारी रीति ही ठीक नहीं है। हम शरीर भान में रहकर परमात्मा को याद करना चाहते हैं। और शरीर का पिता वो है ही नहीं। तो वो सुनेगा क्यों? मदद देगा क्यों आपको? भिखारी को वर्सा देंगे क्या? बच्चे को वर्सा दिया जाता है ना!

तो आप शरीरधारी होकर उसको याद करते हो इसलिए वो मदद देता नहीं, सुनता ही नहीं। इसीलिए आप शरीर भान से अलग होकर, आत्मा बनकर परमात्मा को याद करो तो सेकण्ड में कनेक्शन हो जायेगा। जैसे तार-तार का कनेक्शन होता है ना अगर मैं इसका रबड़ नहीं उतारूं और सारी रात क्यों न मैं इसको जोड़ती रहूँ, कनेक्शन होगा? नहीं होगा ना! तो हम गलती ये करते हैं तार का रबड़ तो उतारते नहीं और तार का कनेक्शन जोड़ने चाहते हैं। एक कहानी है इसपर।

राजा जनक के लिए कहते हैं कि उन्होंने ऐलान किया कि मुझे सेकण्ड में जीवनमुक्ति कोई देवे। कहते हैं कई विद्वान, आचार्य सभी आ गये स्टेज पर कि हम जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं, तो कोई नहीं बता सका।

आखिर में क्या हुआ, एक अष्टावक्र, वो स्टेज पर आया। उसने कहा कि मैं आपको एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति का रास्ता बता सकता हूँ। जब वो स्टेज पर आया तो सब विद्वान, आचार्य हँसने लगे कि देखो अब हम लोग नहीं रास्ता बता सके तो ये जो अष्टावक्र है ये कहता है कि मैं रास्ता बताऊंगा। तो अष्टावक्र ने क्या कहा? सभी के बीच में कहा कि ये सभा जो है ना, विद्वान, आचार्यों की नहीं है। ये सभा चमारों की है। क्यों? चमार क्यों कहा? क्योंकि चमार ने चमड़ी को देखा। चमार क्या करता है सारा दिन? चमड़ी का ही काम करता है ना। तो उसने सीधा ही कहा कि ये चमार हैं। आप मंदिर में जाते हो तो चमड़े की चीज़ आपको ले जाने देते हैं बड़े-बड़े मंदिरों में? क्यों बाहर कहते हैं छोड़ के जाओ? तो परमात्मा से मिलने जाते हो और चमड़ी को साथ में लेके जाने चाहते हो तो बताओ कैसे परमात्मा मिलेगा? जड़ चित्र का दर्शन नहीं हो सकता है और डायरेक्ट परमात्मा से कैसे मिलेंगे? मिल ही नहीं सकते।

इसीलिए परमात्मा सुनता ही नहीं है। और शांति होती ही नहीं है और अशांति बढ़ती जा रही है। तो अभी तो हमारे इतने सारे भाई-बहनें विमान को यूज़ करेंगे? मिला विमान आप सबको? अभी समस्या आयेगी तो क्या करेंगे? उड़ जायेंगे।

बाबा का बच्चा समझने से दो फायदे- एक अलबेलापन समाप्त और दूसरा अभिमान समाप्त

राजयोगिनी दादी जानकी जी

सवेरे-सवेरे अमृतवेले बाबा जगाता है, जगाना उनका काम है, और हमको क्या करना है? अच्छी तरह से उनके सामने बैठ जाना है। सवेरे सो नहीं सकते, बाबा ने ऐसी आदत डाली है। जैसे माँ-बाप बचपन से बच्चों में जो आदत डालते हैं वो जीवन भर काम आती है। हम सब बाबा के बच्चे हैं, भले उम्र में बड़े हैं पर बाबा के बच्चे हैं। अपने को छोटा-बड़ा समझना भूल है। छोटा समझेंगे तो अलबेले हो जायेंगे। बड़ा समझेंगे तो अभिमानी हो जायेंगे। तो बाबा का बच्चा समझने से दो फायदे तुरन्त हो जाते हैं- एक अलबेला समाप्त और दूसरा अभिमान समाप्त।

जैसे बाबा शुरू में कहते थे, ऊंची पहाड़ी पर जाने के लिए डबल इंजन लगती है। तो ऊंची स्थिति पर जाने के लिए तुम्हें भी डबल इंजन मिली हुई है। निराकारी भी रहो, निर्विकारी भी रहो। आज बाबा ने कहा याद में नहीं रहेंगे तो विकर्माजीत कैसे बनेंगे? अभी है विकर्माजीत बनने का समय। हमारी विकर्मों पर जीत माना कोई विकल्प न आये। पुराने विकर्म तो विनाश हो जायें पर अभी इतनी जीत हो। जिन रोया तिन खोया, पद कम, सारी कमाई खत्म। पहले आँखों से प्रेम के आँसू बहते थे, बाबा ने कहा यह भी कमज़ोरी है, शो है। मम्मा को देखा कभी प्रेम का भी आँसू नहीं बहाया, प्रेम स्वरूप रही है। इतना गम्भीरता पूर्वक ज्ञान को धारण करने से याद में निरन्तर रही है। ज्ञान गम्भीर बनाता है, गम्भीर में दिखावा नहीं होता है, वह अन्दर ही अन्दर सन्तुष्ट रहेगा, प्रसन्नचित्त रहेगा। उसका अनुभव कहता है बाबा ने इतना दिया है, खुश रहना, राज़ी रहना। राज़ी रहने वाला खुश है, खुश रहने वाला राज़ी रहता है। अपनी अवस्था को ऐसा जमाना, यह है समझदार का काम, तब दिखाई पड़ेगा यह सच्चा राजयोगी है। अवस्था जमाने से पहले याद, विकर्माजीत बनने के लिए याद। कोई विकर्म अब न हो, अभिमान वश या लोभ वश या मान-शान वश अपमान की फीलिंग आ गई, तो बाबा दूर चला गया, मैं यहाँ रह गयी। नहीं तो दूर देश वाला बाबा यहाँ बैठा है- समझा रहा है, दिखा रहा है। ऐसी स्थिति बनाने के लिए बहुत भाग्य दे रहा है। संग का, संगठन का, सेवा का भाग्य मिला है। संगठन में एक-दो को याद दिलाना बहुत अच्छा लगता है। कुछ न भी बोलें, पर जहाँ भी हैं जो भी सेवा कर रहे हैं, याद दिला रहे हैं।

विश्व को क्या पढ़ाना है, वो पढ़ा रहा है, विश्व की राजाई लेने के लिए पढ़ा रहा है। हम पढ़ने के लिए बैठे हैं, कितनी सुन्दर सीन लगती है! बड़ा रुचि से, दिल से पढ़ रहे हैं। जो दिल से पढ़ता है उनकी दिलाराम से दिल लगी रहती है। ऐसे पढ़ाने वाले से दिल लगाना भूल होती है। लेकिन यहाँ पढ़ाने वाले से दिल लग गई है, यह भूल नहीं है। दिलवाला मन्दिर यादगार है, क्योंकि तपस्या दिलवाला के साथ हो सकती है। पहले दिल आराम में आई, फिर दिलवाला के साथ तपस्या में बैठने की शक्ति आ गई। जब दिल खुश नहीं है तो मैं कहाँ और वो कहाँ?

मेरी दिल कभी कठोर होगी, कभी कोमल होगी। जब दिल दिलाराम के पास बैठ गई है, तो दिल आराम में है। प्यार भरी दुआएं बाबा से पाई हैं। इतना प्यार है कि मेरे बच्चे को सिर में खुजली भी न हो। ज़रा कांटा भी न लगे, फूलों की तरह पालता है। जिसमें कोई गुण नहीं उसमें बाबा ने सब गुण भर दिये हैं। कैसा हमारा बाबा कल्याणकारी है।

जितना मास्टर ऑलमाइटी का अनुभव करेंगे... उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

अभी हम इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं। साइलेन्स एक बड़ी पॉवर है, इसमें सर्व शक्तियाँ समाई हुई हैं। जैसे साइन्स वालों ने साइन्स पॉवर से शक्तिशाली वस्तुएं बनाई हैं- एटम बॉम्ब आदि। तो हम ऑलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब से साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इस ही जीवन में कराते हैं।

जितना-जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास में रहेंगे। हमारा संकल्प उतना चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो- व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरूषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लियर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पॉवर को कैच कर सकते हैं।

जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है, तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम उन 5 तत्वों से पार हो जाते हैं, पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तब ही हम रीयल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।

हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज़ से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज़ में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर आते हैं- ऐसे अनुभव होगा।

इस साइलेन्स की शक्ति से क्विक सर्विस कर सकते हैं। साइलेन्स पॉवर दूर-दूर में जाकर काम करेगी। बाबा कहते थे बच्चे तुम विश्व कल्याणी हो। तो हमारा विचार चलता कि हम सारे विश्व की सेवा कैसे करेंगे? जब साइलेन्स पॉवर कई जन्मों के विकर्मों को भस्म कर सकती है तो विश्व की आत्माओं की सेवा क्यों नहीं कर सकती! हम सूक्ष्म में किसी भी आत्मा को बुला सकते हैं, उनसे रूहरिहान कर सकते हैं, उसको लाइट-माइट का दान दे सकते हैं। साइलेन्स पॉवर से ऐसा औरों को अनुभव होगा। सेन्टर पर पांव रखेंगे तो जैसे उन्हों को सन्नाटा महसूस होगा। महसूस होगा तो कितनी शान्ति है। यह बहुत मीठी अवस्था है। इससे बहुत शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होती है।

करेंगे। और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जैसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आँखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन उसके कर्त्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। जो जितना हम उस स्थिति में रहेंगे उतना ही हम उस साइलेन्स पॉवर का अनुभव करेंगे। उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर ऑलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था

भारत के माननीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. मृत्युंजय।

यहाँ आध्यात्मिक प्रकंपन... पेज 1 का शेष... राष्ट्र की रक्षा केवल शस्त्र से नहीं होती है बल्कि यह होती है चेतना, चरित्र और चैतन्यता से। इसके लिए आध्यात्मिकता और योग सबसे बड़ा साधन है। यह अभियान महत्वपूर्ण इसलिए भी है कि हम अपने सैनिकों को केवल शस्त्रधारी ही नहीं पर शास्त्रधारी भी बना सकें। लड़ाई के साथ उन्हें आत्मबल के लिए भी तैयार कर सकें।

भारत के माननीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह का स्वागत करते हुए अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी।

पहले अपने भीतर के भय को हराना होगा

समय की ज़रूरत है कि चाहे आप नागरिक हों या सैनिक हों, उनके पास आध्यात्मिक शक्ति होनी चाहिए। अध्यात्म, तनाव, चिंता और भावनात्मक उथल-पुथल से निपटने में मदद करेगा। बाहरी दुनिया को जीतने के पहले भीतर के भय को हराना भी ज़रूरी है। ऐसी स्थिति में योग, ध्यान और अध्यात्म की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। आत्मिक बल हमें अंदर से सशक्त और मजबूत बनाता है। राजस्थान का कण-कण महाराणा प्रताप के शौर्य से वाकिफ है। महाराणा ने घास की रोटी खाना स्वीकार किया, लेकिन कभी अपने स्वाभिमान के आगे नहीं झुके।

राजयोग से मनोविकार हो जाते हैं दूर

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि सेना का त्याग और अनुशासन का जीवन होता है। आप सभी की बदौलत हम सुरक्षित रहते हैं। हर एक व्यक्ति के अंदर एक दिव्य ज्योति है। जब हम उसे पहचान लेते हैं तो आत्मा में दिव्य शक्तियां आ जाती हैं। राजयोग से मनोविकार दूर हो जाते हैं और मन शक्तिशाली बन जाता है। राजयोग का अभ्यास धर्म की सीमाओं से परे है। इससे हमारी निर्णय शक्ति बढ़ती है। संस्था के अतिरिक्त महासचिव डॉ. मृत्युंजय भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

भारत के माननीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को सुरक्षा प्रभाग का मोमेन्टो भेंट करते हुए सुरक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी व ब्र.कु. शिव।

हवाई पट्टी पर किया स्वागत

रक्षामंत्री के मानपुर हवाई पट्टी पहुंचने पर जिला प्रशासन की ओर से कलेक्टर अल्पा चौधरी, पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार, जिले के प्रभारी मंत्री केके विश्नोई, राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत, सांसद लुंबाराम चौधरी, भाजपा जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, रिटायर्ड वाइस एडमिरल इंडियन नेवी सतीश घोरमड़े, ब्र.कु. डॉ. सविता दीदी व अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

आत्मिक शक्ति बढ़ायेंगे तो लाइफ इज़ी रहेगी

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर रायपुर में रूहानी सिंधी सम्मेलन का आयोजन किया गया। स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के निर्माण में सिंधी समुदाय की भूमिका विषय पर सिंधी समाज के संतों के अलावा अनेक वक्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे। ब्र.कु. पुष्पा,मुम्बई,उल्लासनगर ने अपने सम्बोधन में कहा कि सिंधी समाज ने देश के विभाजन के बाद स्वयं को पुनर्स्थापित किया है। सिंधी समाज में प्रमुख 4 प्रकार की विशेषताएं देखी जाती हैं:- 1. व्यापार, 2. श्रम, 3. सेवा भाव, 4. दान पुण्य। समाज में धन और वैभव की वृद्धि तो हुई लेकिन आंतरिक शक्ति कमज़ोर हुई। जिसके कारण कई सामाजिक समस्याएं भी बढ़ती गई। इससे निजात पाने के लिए हमें

आंतरिक शक्ति को बढ़ाना होगा। विधायक अशोक रोहाणी,जबलपुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के माउंट आबू के भिन्न-भिन्न स्थानों पर नेता व अभिनेता आते हैं, तो बोलते हैं आपके यहाँ दादियों व दीदियों का चेहरा चमकता रहता है। यहाँ जो आध्यात्मिकता सिखाई जाती है उससे चेहरे में रूहानियत बढ़ती जाती है। मैं सबसे आग्रह करता हूँ एक बार माउंट आबू अवश्य जायें, परमात्म अनुभूति अवश्य करें। राजयोगिनी ब्र.कु. हेमा दीदी, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. सविता बहन, संत युधिष्ठिर लाल, परमानंद परमहंस सहित सिंधी समाज के अतिथियों ने भी अपने प्रेरणादायी विचार रखे व बड़ी संख्या में सिंधी समुदाय के भाई-बहनें उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन प्रभु स्मृति के साथ हुआ।

विश्व शान्ति और एकता में मीडिया की भूमिका पर सेमिनार में गहन मंथन

मीडिया वालों के लिए ज़रूरी मेडिटेशन का अभ्यास

नरेला-दिल्ली। 'विश्व शान्ति एवं एकता हेतु मीडिया व आध्यात्मिकता की भूमिका' विषय पर नरेला की संजय कॉलोनी में एक विचारोत्तेजक सेमिनार में मीडिया और आध्यात्मिकता के क्षेत्र से जुड़े कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और विश्व शान्ति के लिए सकारात्मक मीडिया की भूमिका पर गहन चर्चा की। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन व छोटे बच्चों के नृत्य के साथ हुआ। जिसके बाद स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन ने सभी अतिथियों और मीडिया से और प्रभावशाली खबरें प्रस्तुत करने में मदद करेगा। दिल्ली मंडल की केन्द्र प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. सुनीता ने बताया कि आज के समय में विश्व में अशान्ति और तनाव बढ़ रहा है। राजयोग मेडिटेशन एकमात्र उपाय है तनाव कम करने का। सेमिनार में शामिल प्रतिभागियों ने इस आयोजन की सराहना की। एक स्वतंत्र पत्रकार ने कहा कि यह सेमिनार हमारे लिए बहुत प्रेरणादायी रहा। हमने यहाँ से यह सीखा कि कैसे आध्यात्मिकता के साथ जुड़कर हम अपनी पत्रकारिता को और

जुड़े लोगों का पटका पहनाकर, पुष्पगुच्छ व प्रतीक चिन्ह भेंट कर हार्दिक स्वागत किया। प्रोफेसर डॉ. प्रदीप माथुर ने अपनी प्रेरणादायी बातें साझा करते हुए कहा कि मीडिया आज समाज का दर्पण है। यदि हम विश्व में शान्ति और एकता लाना चाहते हैं तो मीडिया को सकारात्मकता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना होगा। माउंट आबू से आये ओमशान्ति मीडिया के मुख्य संपादक राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर ने कहा कि पवित्रता और सेवा भाव पत्रकारिता का आधार है। जैसे हम अपने मोबाइल को चार्ज करते हैं, उसी तरह अपने मन को सुव्यवस्थित, सशक्त और मजबूत बनाने के लिए मेडिटेशन ज़रूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के राष्ट्रीय प्रवक्ता और मीडिया प्रभारी ब्र.कु. सुशांत ने कहा कि आध्यात्मिकता और राजयोग के अभ्यास से पत्रकारों को मानसिक शान्ति और संतुलन मिल सकता है, जो उन्हें सकारात्मक सकारात्मक बना सकते हैं। एक अन्य प्रतिभागी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का यह प्रयास सराहनीय है। यह हमें समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी याद दिलाता है। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

ब्रह्माकुमारीज़ बारडोली के डायमण्ड जुबली महोत्सव निमित्त राजयोगी युवा सम्मेलन का आयोजन

बारडोली-गुज.। बारडोली धामदौड़ रोड स्थित बिठ्ठल वाड़ी में आयोजित महोत्सव पर सैकड़ों तपस्वी युवाओं ने शिरकत की। मुख्य रूप से युवा वर्ग में अपार क्षमता होने के बावजूद भी जीवन में संघर्ष और तनाव अनुभव कर रहे हैं। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान समाज के युवकों के अन्दर श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान कर रहा है। संस्था से जुड़े लाखों युवक राजयोग का अभ्यास करते व परिवार समाज के बीच रहकर, आध्यात्मिक ज्ञान अपने जीवन में अपनाकर सम्मानपूर्वक जीवन जी रहे हैं। अपनी दिव्यता और त्याग-तप की शक्ति से जीवन को सुगन्धित कर एक मिसाल कायम की है। तपस्वी कुमार-कुमारी के सम्मान समारोह का भव्य एवं दिव्य कार्यक्रम में बारडोली एवं वलसाड उपक्षेत्रीय 50 सेवाकेन्द्र के युवक-युवतियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, महिला प्रभाग की संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, अहमदाबाद, वलसाड उपक्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. रंजन दीदी तथा डॉ. व्योम पाठक, डॉ. मलिन पारक, नितेश शाह आदि शहर के गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में से अनेक महानुभावों ने अपने प्रेरणादायी सम्बोधन से संबोधित किया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई और मनभावन दिव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम में युवाओं ने प्रस्तुति देकर दिव्य बनाया।

मातेश्वरी जगदम्बा-नारी आध्यात्मिक क्रांति की अग्रदूत

वैसे तो भारत के आध्यात्मिक जगत में नारियों का स्थान लगभग शून्य है और पुरूष प्रधान आध्यात्मिक जगत में तो नारी को 'माया' का पर्याय कहा गया है। समाज में नारियों को सामान्य सामाजिक अधिकारों से वंचित रखते हुए घर-आँगन की चारदीवारी में पर्दे के अंदर सीमित रखते हुए अबला बना दिया गया है। पिताश्री ब्रह्मा के मार्गदर्शन में मातेश्वरी जगदम्बा ने जब अध्यात्म के पथक को चुना था तो उस समय यह बहुत ही साहसिक निर्णय था। मातेश्वरी जगदम्बा जी ने नारी जागरण की आध्यात्मिक क्रान्तिदूत बनकर नारियों के लिए जीवनमुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया। सदियों से नारियों के मानसिक बन्धनों की बेड़ियों को तोड़कर एक प्रकार से पुरूष प्रधान समाज की व्यवस्था को सीधे चुनौति दे दी। हंगामा तो होना ही था। रूढ़िवादी लोगों ने मातेश्वरी जी के मनोबल को तोड़ने के लिए 'ओम मंडली' संस्था के विरूद्ध धरना प्रर्दशन, हिंसात्मक विरोध से लेकर न्यायालय तक भारी विरोध किया। इन विरोधों के बीच मातेश्वरी जी परमात्म-शक्ति के निश्चय बल से अचल-अटल रहीं। मातेश्वरी जी ने दृढ़ निश्चय और विवेकपूर्ण ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र से विरोधियों पर विजय प्राप्त किया। सोना के तपने के बाद उसकी शुद्धता प्रमाणित होती है। रूढ़िवादी समाज के विरोध से मातेश्वरी जी की आध्यात्मिक चेतना और अधिक प्रखर होती गई और अपने तप, त्याग और तपस्या के बल से समस्त नारी जगत के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई।

मातेश्वरी जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए हज़ारों नारियां सृष्टि परिवर्तन के पथ पर चल पड़ी और श्वेत वस्त्रधारियों का यह कारवां निरन्तर वृद्धि को पाते हुए अपनी मंज़िल की ओर गतिमान है। वर्तमान समय में, लाखों ब्रह्माकुमारी बहनें मूल्यनिष्ठ समाज की पुनर्स्थापना के लिए निरन्तर सक्रियतापूर्वक समाज को एक नई दिशा दे रही हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में नारियों को जो सम्मान प्राप्त हो रहा है, वह मातेश्वरी जगदम्बा जी के अज्ञानता के विरूद्ध आध्यात्मिक चेतना के उत्कर्ष का फल है।

ज्ञान की पारसमणि...

मातेश्वरी जगदम्बा जी के सम्पर्क में आने वाले मनुष्यात्माओं की चेतना ज्ञान के स्पर्श से सहज ही प्रदीप्त हो जाती थी। मातेश्वरी जी ने ईश्वरीय 'आदेशों एवं निर्देशों' को आत्मसात् करके अध्यात्म के शिखर को स्पर्श कर इस अद्भुत क्षमता को प्राप्त किया था। वे परमात्मा द्वारा मनुष्यात्माओं के कल्याण के लिए चलाई जाने वाली 'ज्ञान मुरली' को तुरंत स्पष्ट कर देती थी।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की स्थापना के प्रारंभिक दिनों में समाज के रूढ़िवादी लोगों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान का भारी विरोध किया गया। यह ईश्वरीय ज्ञान एक नए आदि सनातन धर्म की पुनर्स्थापना के लिए था। आदि सनातन दैवी धर्म की पुनर्स्थापना का मूल आधार पवित्रता है, जो इस कलियुगी दुनिया की परंपरा से बिल्कुल ही अलग है। परमात्मा द्वारा पिताश्री ब्रह्मा के माध्यम से दिया जा रहा ईश्वरीय ज्ञान एक आध्यात्मिक क्रांति थी।

नई सतयुगी दुनिया के लिए तमोप्रधान बुद्धिवादी समाज द्वारा इस नए ज्ञान को स्वीकार करना अत्यंत असहज था। परंपरावादियों के द्वारा संस्था के ऊपर कोर्ट में मुकदमा भी किया गया। मातेश्वरी जगदम्बा जी ने कोर्ट में अपने ज्ञानयुक्त तर्कों को आध्यात्मिक शक्ति से रखकर जज को चमत्कृत कर दिया, जिससे संस्था के पक्ष में फैसला आया। मातेश्वरी जी अध्यात्म के पथ पर पहले स्वयं चल अन्य सभी के लिए उदाहरणमूर्त बनकर मार्गदर्शन करती थी। वे पहले अपने जीवन के आध्यात्मिक अनुभवों से शिक्षा देकर लोगों का विश्वास अर्जित करती थी, जिससे लोग इस नये ज्ञान का विरोध भूलकर इसे स्वीकार कर लेते थे।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की वैश्विक स्तर पर जो पहचान बनी है, उसकी नींव मातेश्वरी जगदम्बा ने अपने त्याग, तपस्या और सेवा से तैयार की थी। नारी शक्ति द्वारा संचालित और ब्रह्मचर्य की साधना पर टिकी हुई वर्तमान तमोप्रधान विश्व में शान्ति की राह दिखाने वाली ब्रह्माकुमारीज़ संस्था सम्पूर्ण मानवता के लिए एक ईश्वरीय उपहार है। यहाँ के साप्ताहिक कोर्स में ईश्वरीय ज्ञान के गुह्य रहस्यों का सहज ढंग से इस प्रकार प्रस्तुतीकरण है कि मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान स्वतः हो जाता है।

शांतिवन-आनन्द सरोवर(राज.)। विश्व पृथ्वी दिवस पर 'अवर पॉवर,अवर प्लैनेट' विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ के वैज्ञानिक, इंजीनियर एंड आर्किटेक्ट प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, वैज्ञानिक, इंजीनियर एंड आर्किटेक्ट प्रभाग के मुख्यालय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, पूर्व वाइस एडमिरल,इंडियन नेवी सतीश कुमार घोरमड़े,नई दिल्ली, रिटायर्ड डीजीएम,सेल,ब्र.कु. नरेश गुप्ता तथा अन्य।

खटीमा-उत्तराखंड। पुनः निर्मित भवन का नारियल तोड़ कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,माउंट आबू, राजयोगिनी ब्र.कु. राजकुमारी दीदी,दिल्ली,मजलिस पार्क, ब्र.कु. शारदा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

अपने मन की स्थिति के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं होना

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

घर की एनर्जी घर में रहने वालों से बनती है। अब मान लो एक घर में चार लोग रहते हैं। उन चार की मनोस्थिति उस घर की एनर्जी बनाती है। अब वो चार लोग घर से निकलकर ऑफिस जाते हैं। वहाँ उनकी सोच अलग होती है। तो घर और ऑफिस की एनर्जी अलग होती है। वो ही चार लोग शॉपिंग करने जाते हैं या धर्मस्थल पर जाते हैं तो वहाँ की एनर्जी अलग होती है। धर्मस्थलों की एनर्जी कैसे बनती है? हम वहाँ जाते हैं और परमात्मा को याद करते हैं, धन्यवाद देते हैं, शान्ति, क्षमा, सहयोग, शक्ति ऐसी बातें करते हैं, तो उस स्थान के वायब्रेशन हाई हो जाते हैं।

जब कोई एक आता है उस स्थान पर जिसका मन बहुत परेशान होता है। वो तो भगवान को भी याद नहीं कर पा रहा, इस समय वो इतना परेशान है। यह भी हो सकता है कि वो भगवान से नाराज़ हो। उसके जीवन में बहुत कुछ गलत हुआ है। उसको लगता है इसका ज़िम्मेदार भगवान है। वो गुस्से में उस धर्मस्थान पर पहुंचता है। लेकिन जैसे ही वो वहाँ पहुंचता है, उसे सुकून मिलता है। वो सुकून उसको उस स्थान के वायब्रेशन ने दिया। लेकिन वो वायब्रेशन किसने बनाया? वो सारे लोग जो वहाँ जाकर परमात्मा को याद करके अच्छे वाले वायब्रेशन क्रिएट कर रहे थे। इससे स्थान की हाई एनर्जी बन जाती है। दूर-दूर से लोग वहाँ जाने के लिए क्यों आते हैं? क्योंकि वहाँ के वायब्रेशन, वहाँ की ऊर्जा से उन्हें सुकून मिलता है।

जिनका रोल है हमें संभालने का, वो तो अपना जीवन रिस्क पर लगाकर बाहर हैं। हम सिर्फ घर पर बैठकर क्या कर रहे हैं। हमारी सिर्फ छोटी-सी ज़िम्मेदारी है- अपने-अपने मन का ध्यान रखना। अपने-अपने मन का ध्यान रखकर वायब्रेशन को इतना ऊंचा उठाना है कि पूरे देश की एनर्जी चेंज हो जाए। उससे पूरे विश्व की एनर्जी चेंज हो जाए। जब वायब्रेशन चेंज हो जाएंगे, जब मन की स्थिति चेंज हो जाएगी, तो पहले मन सुरक्षित, फिर शरीर का इम्यून सिस्टम ठीक, फिर वो जो वायब्रेशन चेंज होगा, उसका प्रकृति पर भी तो असर पड़ेगा। क्योंकि संकल्प से सृष्टि बनती है। संकल्प से सिद्धि होती है।

हम स्कूल का छोटा-सा एग्ज़ाम देने जाते थे, तब भी हमें सिखाया जाता था कि मन को शान्त रखना। मन शान्त रखोगे तो सारे उत्तर याद आ जाएंगे। अगर मन टेंशन में हो गया तो जो याद था वो भी नहीं आएगा। बचपन से सिखाई गई थी ये बात कि परिस्थिति जब मुश्किल हो तो स्व-स्थिति ठीक होनी चाहिए। जब परिस्थिति अच्छी हो तब टेंशन हो तो कुछ नहीं होगा। लेकिन जब परिस्थिति अच्छी नहीं है तब टेंशन हो तो ये बहुत बड़ा रिस्क हो जाता है।

तो आज से एक एक्सपेरिमेंट। इसको कहेंगे आत्मनिर्भर। आत्मा स्वयं पर निर्भर है। इमोशनल इंडिपेंडेंस का अर्थ क्या है- डिपेंडेंट इनसाइड, मतलब दूसरों पर निर्भर नहीं अपने मन की स्थिति के लिए। तो चाहे मन में कुछ भी हो जाए हम ये नहीं कहेंगे कि उनकी वजह से ऐसा हुआ। आप सिर्फ ये कहना ये मैंने किया। जैसे ही आपने कहा कि ये मैंने क्रिएट किया, तो वह सर्कल पूरा होता है और पॉवर मेरे पास आती है। मान लो कि ऐसा करके आपने अपनी शक्ति ही बचाई है।

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। भारत के रक्षा मंत्री माननीय राजनाथ सिंह को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. दिलीप,शांतिवन। साथ हैं संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय।

कोलकत्ता-बारानगर(प.ब.)। ब्र.कु. पिंकी को बाबासाहेब अम्बेडकर कल्चरल कॉलेज की तरफ से 'कृति वास स्मृति स्वर्ण पदक' से सम्मानित करते हुए पश्चिम बंगाल सरकार के पूर्व मंत्री, विधायक, तृणमूल के चिकित्सक संगठन के प्रोग्रेसिव डॉक्टर एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. निर्मल कुमार मांझी, कल्चरल कॉलेज के संपादक दिलीप विश्वास द्वारा प्रदान किया गया।

हाथरस-उ.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत महामायानगर पॉलीटैक्निक ऑफ इन्फॉर्मेशन एंड टेक्नोलॉजी में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन, ब्र.कु. दिनेश, ब्र.कु. गजेन्द्र, प्राचार्य नीरज कुमार, प्रवक्ता राकेश कुमार शर्मा तथा युवागण।

रूरा-उ.प्र.। द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन आध्यात्मिक मेला का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्ष रामजी गुप्ता, लखनऊ कृषि भवन के पूर्व निदेशक बद्री विशाल तिवारी, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. बिमलेश, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. श्याम, भाजपा नेत्री श्रवण गुप्ता तथा अन्य भाई-बहनें।

पठानकोट-पंजाब। विश्व जल दिवस पर आयोजित सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नरेश महाजन एक्शियन, कलाकार सुरेश मनचन्दा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सत्या दीदी, ब्र.कु. रीटा,सुजानपुर, ब्र.कु. प्रताप तथा अन्य।

पटना सिटी-हाजीगंज(बिहार)। भारतीय स्टेट बैंक,पटना सिटी के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक आदित्य शादाब को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बबीता। साथ हैं ब्र.कु. रानी,पंचवटी कॉलोनी।

फिरोज़ाबाद-उ.प्र.। नवरात्रि के अवसर पर सजाई चैतन्य देवियों की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता, एडवोकेट अनुप चन्द्र जैन, श्री देवी चरण अग्रवाल,बिज़नेसमैन, नीरज पटेल,टैक्स ऑफिसर,नगर निगम तथा अन्य।

भद्रक-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मूल्यनिष्ठ समाज गठन के लिए समाजसेवी सोफिया शेक को सम्मानित करते हुए जिलापाल दिलीप राउतराय एवं ब्र.कु. मंजू बहन। साथ हैं पूर्व लोकायुक्त अध्यक्ष देवब्रत स्वांई और प्रिंसिपल हरिहर दास।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

सत्तू के ये फायदे बनाते हैं... इसे सुपरफूड...

सत्तू विशेषकर चने का सत्तू भारतीय आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसके कई स्वास्थ्य लाभ हैं। सत्तू एक पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ है जिसे भूने हुए चने या अन्य अनाजों को पीसकर बनाया जाता है। गर्मियों के दिनों में यह एक हेल्दी ड्रिंक होता है जिसका सेवन लू से बचने के लिए भी किया जाता है। गर्मी का मौसम शुरू होते ही लोग लू से बचने के लिए सत्तू पीना शुरू कर देते हैं। ये गर्मी से राहत दिलाता है इसलिए सत्तू को इस मौसम का सुपरफूड कहा जाता है। इसे रोज़ाना अपनी डाइट में शामिल करने से आपको एक, दो नहीं बल्कि कई तरह के फायदे मिलते हैं। आइए जानते हैं इन फायदों के बारे में...

पोषक तत्वों से भरपूर है सत्तू

सत्तू में प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, आयरन और मैग्नीशियम जैसे आवश्यक पोषक तत्व होते हैं, जो आपके शरीर को ऊर्जा संचार करते हैं और आपको हेल्दी रखते हैं।

1. सत्तू खाने के फायदे

सत्तू प्रोटीन से भरपूर एक फूड है। जिसे खाकर आपका पेट लंबे समय तक भरा रहता है। इसके साथ ही सत्तू में कैल्शियम भी पाया जाता है जो इसे और भी फायदेमंद बना देता है। इन फायदों की वजह से आप गर्मी के दिनों में सत्तू से अपने दिन की शुरूआत कर सकते हैं।

2. एनर्जी लेवल बढ़ाए

सत्तू त्वरित ऊर्जा का स्रोत होता है और इसे पीने से थकान और कमज़ोरी को दूर किया जा सकता है। दिन की शुरूआत सत्तू से करने से आप पूरे दिन एनर्जेटिक महसूस कर सकते हैं। दरअसल, सत्तू में कॉम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है जो इसे और भी हेल्दी बना देता है। सत्तू में मौजूद कार्बोहाइड्रेट थकान को रोकता है और आपको एनर्जी से भरपूर रखता है।

3. डायबिटीज़ में असरदार

सत्तू में ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। जो ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित रखने में सहायक होता है। डायबिटीज के मरीजों को ज़्यादा देर तक खाली पेट न रहने की सलाह दी जाती है। ऐसे में रोज़ सुबह सत्तू का ड्रिंक बनाकर पीना उनके लिए फायदेमंद हो सकता है। सत्तू में कुछ ऐसे गुण पाए जाते हैं जिस वजह से शुगर लेवल आर्टिफिशियल तरीके से बढ़ नहीं पाता है।

4. पाचन में फायदेमंद

फाइबर से भरपूर सत्तू आपके लिए एक नैचुरल पाचक की तरह काम करता है। सत्तू खाने को पचाने में आसानी से मदद करता है और कब्ज की समस्या से भी राहत दिलाता है।

5. वेट लॉस में असरदार

सत्तू खाने या फिर इसका ड्रिंक पीने के बाद आपको ज़्यादा देर तक भूख नहीं लगती है जिस वजह से आप ओवरइटिंग से बचे रहते हैं। ब्रेकफास्ट में नमकीन सत्तू खाकर आप आसानी से वेट लॉस कर सकते हैं।

6. हाइड्रेशन में मदद करता है

गर्मियों के मौसम में सत्तू का शरबत शरीर को ठंडक पहुंचाता है और हाइड्रेशन में सहायक होता है।

7. हृदय स्वास्थ्य

सत्तू में सही मात्रा में वसा और फाइबर पाया जाता है जो कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखते हैं और हृदय रोगों के जोखिम को कम करते हैं।

8. डिटॉक्सिफिकेशन

सत्तू शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है और लीवर को साफ रखने में सहायक होता है।

सत्तू के फायदे के साथ इसके पीने के

सत्तू का सेवन कैसे किया जाता है?

तरीके भी बहुत हैं और आप अपनी पसंद और ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए इसका सेवन कर सकते हैं। यहाँ सत्तू पीने के कुछ सामान्य और फेमस तरीके नीचे दिए गए हैं -

1. सत्तू का मीठा शरबत

एक गिलास पानी में दो से तीन चम्मच सत्तू डालकर, उसमें एक से दो चम्मच गुड़ या चीनी स्वादानुसार डालकर फिर थोड़ा-सा नींबू यदि आप चाहें तो मिला सकते हैं। फिर उसमें चुटकी भर नमक स्वादानुसार मिलाकर आप पी सकते हैं।

2. सत्तू का नमकीन शरबत

एक गिलास पानी में दो से तीन चम्मच सत्तू डालकर उसमें एक से दो चम्मच साधारण नमक या काला नमक, एक चौथाई भूना हुआ जीरा पाउडर, बारीक कटा हुआ धनिया, थोड़ा-सा नींबू मिलाकर पी सकते हैं।

ज़्यादा सत्तू के नुकसान क्या हैं?

सत्तू का सेवन बहुत ही फायदेमंद होता है लेकिन किसी भी चीज़ का अत्यधिक सेवन नुकसानदेह हो सकता है। यहाँ सत्तू के कुछ संभावित नुकसान दिए गए हैं जो सत्तू का अत्यधिक सेवन करने से हो सकते हैं:

पाचन संबंधी समस्याएं

सत्तू में ज़्यादा मात्रा में फाइबर पाया जाता है जो अत्यधिक मात्रा में सेवन करने से गैस, पेट दर्द और अपच जैसी समस्याएं उत्पन्न कर सकता है।

वजन बढ़ना

सत्तू में कैलोरी पाई जाती है और यदि इसका अत्यधिक सेवन किया जाए तो यह वजन बढ़ने का कारण बन सकता है, खासकर तब जब आप कम शारीरिक गतिविधि करते हैं।

एलर्जी

कुछ लोगों को सत्तू के सेवन से एलर्जी हो सकती है। एलर्जी के लक्षणों में खुजली, सूजन या त्वचा पर लाल चकत्ते भी हो सकते हैं।

ब्लड शुगर लेवल के स्तर में बदलाव

यदि आप डायबिटीज़ के मरीज हैं और सत्तू में चीनी मिलाकर सेवन करते हैं तो यह आपके ब्लड शुगर लेवल के स्तर में बदलाव कर सकता है। इसलिए मधुमेह के मरीजों को सत्तू का सेवन बिना चीनी के करना चाहिए।

मंज़िल पर पहुंचने के लिए निरंतरता लायें...

लास्ट सो फास्ट कैसे जायें?

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि जिसको लास्ट सो फास्ट जाना है वो इस चीज़ पर बहुत ध्यान दें कि हमें सवेरे उठके परमात्म मिलन का सुख लेना है, उसको शुक्रिया किया करें तो उसके प्यार में मन मगन होता रहेगा। उससे क्षमा-याचना भी कर लें ज़्यादा पाप कर लिए हों, ज़्यादा विषयी जीवन रहा हो, ज़्यादा गड़बड़ कर ली हो जीवन में, कईयों ने की है बहुत गड़बड़, वो गड़बड़ करने वाले सब जानते हैं, हमने क्या-क्या गड़बड़ की। एक तो उसे भुलाना पड़ेगा, तो ये चीज़ें भूलना सहज भी नहीं होता है, यह भी सत्य है। भुलाना तो पड़ेगा। लेकिन आगे ऐसा कुछ न हो ये प्रतिज्ञा भी करनी पड़ेगी।

भगवान को वचन भी देना पड़ेगा, अब एक नैचुरल चीज़ कर लें कि मैं तो देव कुल की पुण्य आत्मा हूँ ना! ये सब कार्य मेरे नहीं हैं। दो-चार दिन ही अपने को पढ़ाएंगे ना, सात दिन कर लो। छूट जाएंगे सारे सूक्ष्म पाप कर्म। क्योंकि पाप कर्मों का बोझ किसी के लिए भी पुरूषार्थ में सबसे सूक्ष्म बाधा होती है। मनुष्य को पता नहीं चलेगा, मन भटक जाएगा, खुशी गुम हो जाएगी, शान्ति चली जाएगी, पुराने संस्कार जागृत हो जाएंगे। ये विकर्मों के खाते का बहुत बुरा इफेक्ट होता है। इसलिए पुण्य कर्म करने का भी एक सुन्दर संकल्प कर लें। तो हमारा त्याग, चेक कर लें मुझे किस-किस चीज़ का त्याग कर देना है। पहले मेरे में ये संस्कार था, अभी मुझे इसको छोड़ के ये सुन्दर संस्कार धारण करना है।

हँसी की बात सुना दूं। एक बहुत अच्छे घर की बहन मुझे फोन करती है, बहुत साल पहले की बात है, बोली कि मेरे अन्दर चोरी की आदत है भाई जी, जाती नहीं। मैंने कहा क्यों- पैसा कम है या और कोई बात है? नहीं, सब कुछ ठीक है। मैंने कहा फिर? आज मैं कुछ सामान खरीद के आई थी एक कपड़े की दुकान से, दो साड़ी भी चोरी कर लाई। वो देख ली पति ने, पति ने कहा ये कहाँ से लाई है, ये तो लाना नहीं था। उसको शक हुआ, आग्रह, दबाव किया तो आखिर मुझे बताना पड़ा। ये तो मैं चोरी कर लाई हूँ दुकान से और सामान ले रही थी, ये भी उठा लिया। तो पति ने कहा कि अभी मेरे साथ चलो

बाबा हमें भी कहते हैं कि कोई भी ऐसी गलती हो, कोई भी ऐसा संस्कार हो जो आपसे छूट न रहा हो, वो बाबा को अर्पित करो, सात दिन लगातार करो रोज़ सवेरे। और रिटर्न में फील करो कि बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखके वरदान दे दिया और हम मुक्त हो गए उस बुरे संस्कार से। तो लास्ट सो फास्ट जा सकेंगे।

और दुकानदार के पास, क्षमा मांगों और वापिस करके आओ। अब बेचारी लज्जा के मारे ज़मीन में गड़ गई जैसे। अब वो पति इधर-उधर हुआ तो उसने मुझे फोन किया कि ऐसा हो गया, पति तो ये कह रहा है। तो मैंने कहा बहुत सुन्दर अवसर है, इस संस्कार को मिटाने का, पति को कहो कि बिल्कुल ये मेरी बहुत बड़ी गलती है, मैं इसको सुधारना चाहती थी, पर हो नहीं पा रहा था। चलो मैं आपके साथ चलती हूँ, क्षमा भी मांगती हूँ और साड़ी वापिस करती हूँ। दुकानदार बहुत खुश हुआ और उस दिन से इसका ये संस्कार छूट गया। बाबा हमें भी कहते हैं कोई भी ऐसी गलती हो, कोई भी ऐसा संस्कार हो जो आपसे छूट न रहा हो वो बाबा को अर्पित करो, सात दिन लगातार करो रोज़ सवेरे। और रिटर्न में फील करो कि बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखके वरदान दे दिया उसके रिटर्न में और हम मुक्त हो गए उस बुरे संस्कार से। तो लास्ट सो फास्ट जा सकेंगे। ढीली आत्माएं तो मंज़िल पर कभी पहुंच ही नहीं सकती हैं।

अगर आपकी चाल ही ढीली है, कभी पुरूषार्थ करते हैं और कभी छूटता है, आपमें कंसिस्टेंसी है ही नहीं, निरंतरता है ही नहीं तो आप इस ऊंची मंज़िल पर कैसे पहुंचेंगे? अपने से बात करो। सो तो बाद में लेंगे, सोने के लिए बहुत समय मिलेगा। भगवान भाग्य बांट रहा है, ये सुन्दर कॉम्पिटिशन चल रहा है, रेस चल रही है। मुझे इस रेस में पीछे नहीं रहना है, गोल्ड मैडल ही लेना है, उमंग बढ़ा दो मन में। हमारे उमंगों के अनुसार हमारा ब्रेन भी वैसे ही मैनेज कर लेता है। हमारे उमंग से आलस व अलबेलापन पूरी तरह समाप्त हो जाता है और हम अपनी मंज़िल की ओर चलने लगते हैं। जब जीवन में निरंतरता आ जाती है पुरूषार्थ की, जब खुशी और नशा निरन्तर रहने लगता है तो हमारे बढ़ते हुए कदमों को कोई रोक नहीं सकता।

यज्ञ की शुरुआत में बाबा ने कईयों को बन्धन से छुड़ाकर उन्हें शिवशक्ति स्वरूपा बनाया। ईश्वरीय ज्ञान में वो चुम्बक था जो हम एक मिनट भी उसके बिना रह नहीं पाते थे। रोज़ ईश्वरीय ज्ञान ना सुनें तो जैसे ऐसे लगता कि शरीर से प्राण ही निकल गया हो! जहाँ ये ईश्वरीय ज्ञान नया होने के कारण समाज में विरोध तो था लेकिन बाबा की शक्ति और हमारी लगन के आगे सबकुछ फीका हो जाता, वो विरोध, विरोध ही नहीं लगता बल्कि और ही हम शक्तिशाली अनुभव करते।

ईश्वरीय शक्ति के आगे कोई न टिक पाया...

जो ज्ञान भगवान ने अर्जुन को सुनाया, वो ज्ञान उस वक्त बाबा ने हमें भी थोड़ा-थोड़ा सुनाया। बाबा का ज्ञान मुझे इतना अच्छा लगा कि मन में ख्याल आया कि यह ज्ञान हमारे अपने लौकिक मात-पिता और परिवार के पास भी हो ताकि उनका दुःख भी खत्म हो जाए और वो सुखी हो जाएं। ये बात मैंने बाबा को बताई तो बाबा ने कहा बच्ची मैं माताओं का सर्वेन्ट हूँ, चलो मैं भी चलता हूँ। बाबा हाथ पकड़कर मेरे साथ-साथ चले। इतना बड़ा बाबा निराकार-निरंहकारी बनकर चले। कदम-कदम में हमने बाबा का चरित्र देखा। बाबा जब माता से मिले तो वो रो रही थी क्योंकि उनके बच्चे की मृत्यु का दुःख था। बाबा ने कहा कि बच्ची ये कपड़े को बदल दो क्योंकि इससे ये बच्चा याद आयेगा और आप ये नया वस्त्र पहन लो जिससे आपको श्रीकृष्ण जैसा बच्चा मिलेगा, तो दुःख तो नहीं होगा ना! और माता को कहा कि कल सत्संग में आना। जब वो बाबा के पास आई तो माता को बाबा का साक्षात्कार हुआ और बहुत अच्छा अनुभव भी हुआ। उसे देखकर उसके माँ-बाप और परिवार जोकि अय्याशी घर के थे मांस, अण्डा, शराब आदि का सेवन करते थे। परिवार वालों ने भी जब देखा कि इन्हों को सुख मिल रहा है तो वो भी बाबा के पास मिलने आये। तो बाबा ने कहा कि इनको पहले मम्मा से मिलाओ। जैसे ही मम्मा को उन्होंने पहली बार देखा तो उनको श्रीलक्ष्मी का साक्षात्कार हुआ और वो भी ज्ञान में चल पड़े।

ऐसे धीरे-धीरे बाबा के पास सतसंग में बहुत अच्छे-अच्छे बड़े घरों की माताएं और कन्याएं आने लगीं। उस वक्त ब्रिटिश का राज होने के कारण उनके पति विदेश में धन्धा अर्थ जाते थे और एक-दो मास के लिए घर आते थे। लेकिन जब आते थे तो माताओं ने उनको पवित्रता के बारे में बताया तो वे समझ ही नहीं सके इसके कारण बहुत हंगामा हुआ। लेकिन माताओं ने पवित्रता के व्रत के साथ कोई समझौता नहीं किया। ये बात तो हिस्ट्री में हम सबने सुना ही है ना, इसीलिए इसको आगे नहीं बताती हूँ।

दादी कहती हैं कि बाबा में एक चुम्बक था। जिस कारण हम एक मिनट भी बाबा से बिछड़े नहीं। एक बार मैंने बाबा से कहा कि मैं स्कूल छोड़ दूँ? तो बाबा ने कहा, नहीं बच्ची। आपके स्कूल जाने से कई बच्चे और टीचर में भी ज्ञान की जागृति आएगी। मैं धक्के खाकर तो जाती थी स्कूल में, लेकिन लगन मेरी बाबा के पास ही थी। मैंने देखा कि कई माताएं पवित्रता के बन्धन के कारण यहाँ आ नहीं सकती थी। लेकिन बाबा को वें अन्दर ही अन्दर याद करती और बाबा को कहती मैं ज्ञान अमृत के बिना कैसे रह सकेंगी! जब तक हम ज्ञान अमृत न पिएं तो हमारा प्राण ही निकल जाएगा। ये मन की भीतरी लगन की आवाज़ बाबा तक पहुँचती था।

फिर जब बहुत बच्चे आने लगे तो बाबा ने हॉस्टल खोला जिसमें बाबा ने मुझे टीचर बन पढ़ाने की ज़िम्मेवारी दी। बाबा ने हॉस्टल के बच्चों की दिनचर्या सेट करके दिया और मैं उन बच्चों को पढ़ाने लगी। उनकी दिनचर्या सुबह साढ़े तीन बजे उठाना, नहलवाना फिर उन सबको बगीचे में ले जाना। उस समय ही बाबा ने सभी बच्चों को सफेद ड्रेस पहनाना शुरू कर दी। बच्चे बहुत रॉयल, सफाई वाले बहुत अच्छे, भोजन बहुत अच्छा, इकट्ठा बैठकर खाना, बच्चे की अच्छे से खातिरी करना जैसे कि एक राजकुमार-राजकुमारी हो। हॉस्टल में मुख्य चार पीरियड होते थे। उन्हें अंकगणित, सिंधी इतिहास और भूगोल पढ़ाया जाता था।

हम चार बहनें थीं। एक-एक पीरियड लेते थे। बाबा आकर के चेक करते थे कि हम क्या और कैसे पढ़ाते हैं। रोज़ रात्रि को सारे दिन की दिनचर्या हम बाबा को बताते थे। ये भी हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य था जो शुरू से ही बाबा के साथ-साथ हमें रहने का भाग्य मिला।

मैं रोज दुःखी माताओं को ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर सेवा करती थी। बाबा ने इस तरह हमको तैयार किया और बाबा ने मुझे शुरू में ही तुम शिवशक्ति हो ये वरदान दिया था, इसलिए मुझे कभी भी डर या भय नहीं लगता था। बाबा मुझे बांधेलियों के पास भेजते थे और इतने विरोध के बावजूद भी मैं बाबा का सन्देश लेकर उनके घर जाती थी और बाबा का संदेश सुनते ही बहुत ही खुश होती थी। मैं उनकी बातों को सुनकर बाबा के पास जाकर बताती थी। बाबा बहुत ही उन्हें सकाश देते थे।

खुशखबरी...

आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

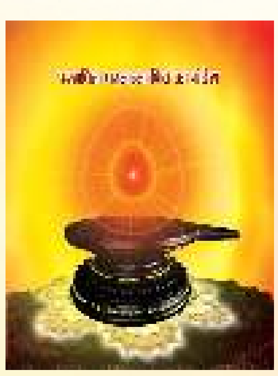

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org

कोरापुट-ओडिशा। 'खुशी सफलता की कुंजी' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी,दिल्ली। मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. रुकमणी दीदी,माउंट आबू, 7वें बटालियन कमांडर एस.एन. नायक एवं डी.एफ.ओ. भास्कर राव।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। प्रभु उपहार रिट्रीट सेन्टर के परिसर में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य जिला कृषि अधिकारी रवि नारायण पंडा, ब्रह्मपुर स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के निदेशक दीपक राव, ब्रह्मपुर सबज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, ब्र.कु. प्रवती तथा अन्य।

परमात्म ऊर्जा

अपने आदि और अनादि स्वस्थिति को जानते हो? सदा अपनी स्व स्थिति में स्थित रहने का अटेन्शन रहता है? जो स्व स्थिति अर्थात् अनादि स्थिति है उस स्व स्थिति में स्थित होना मुश्किल लगता है? और स्थिति में स्थित होना मुश्किल हो भी सकता है, लेकिन स्व स्थिति में स्थित होना तो स्वतः ही और सरल है ना। स्व स्थिति सदा रहती। अगर चारों में से कोई की भी कमी है तो स्व स्थिति में भी कम स्थित हो सकता है। स्व स्थिति का जो वर्णन करते हो उसको सामने रखते हुए फिर सोचो कि कौन-सी चार बातें सदा साथ होनी चाहिए? स्व स्थिति के लक्षण क्या होते हैं? जो भी बाप के गुण हैं उन गुणों का स्वरूप होना इसको कहते हैं स्व स्थिति व अनादि स्थिति। तो ऐसी स्थिति सदा रहे इसके लिए चार बातें कौन-सी आवश्यक हैं? स्मृति में आता है जिन चार बातों के होने से अनादि स्थिति ऑटोमेटिकली रहती है? सुख, शांति, आनन्द, प्रेम की स्थिति स्वतः ही रहती है? पहले यह सोचो कि अनादि स्थिति से मध्य की स्थिति में आते ही क्यों हो? इसका कारण क्या है? (देहअभिमान) देह अभिमान में आने से क्या होता है, देह अभिमान में आने के कारण क्या होते हैं? पर स्थिति सहज और स्व स्थिति मुश्किल क्यों लगती है? देह भी तो स्व से अलग है ना! तो देह में सहज स्थित हो जाते हो और स्व में स्थित नहीं होते हो, कारण? वैसे भी देखो तो सदा सुख व शान्तिमय जीवन तब बन सकती है जब जीवन में चार बातें हों। वह चार बातें हैं - हेल्थ, वेल्थ, हैप्पी और होली। अगर यह चार बातें सदा कायम रहें तो दुःख और अशान्ति कभी भी जीवन में अनुभव न करें। ऐसे स्व स्थिति का स्वरूप भी है- सदा सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम स्वरूप में स्थित रहना। तो स्व स्थिति से भी विस्मृति में आते हो इसका कारण क्या होता है? वेल्थ की कमी व हेल्थ की कमज़ोरी व होली नहीं बनते हो। इसके साथ साथ हैप्पी अर्थात् हर्षित नहीं रह सकते हो। तो हेल्थ, वेल्थ कौन सी? आत्मा सदा निरोगी रहे, माया की कोई भी व्याधि आत्मा पर असर न करे इसको कहा जाता है हेल्दी। और वेल्दी भी हो अर्थात् जो खज़ाना मिलता रहता है व जो सर्व शक्तियां बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हुए हैं उस प्राप्त हुए ज्ञान खज़ाने को व सर्व शक्तियों के खज़ाने को सदा कायम रखो तो बताओ स्व स्थिति से नीचे आ सकते हो? इतना ही फिर होली। संकल्प, स्वप्न में भी कोई अपवित्रता ना हो तो स्व स्थिति स्वतः ही हो जाएगी। इन चार बातों की कमी होने कारण स्व स्थिति में सदा नहीं रह सकते हो। यह चार बातें चैक करो - हेल्दी, वेल्दी कहाँ तक बने हैं? हेल्दी, वेल्दी और होली यह तीनों ही बातें है तो हैप्पी ऑटोमेटिकली होंगे। तो इन चार बातों को सदा ध्यान में रखो।

फिरोज़पुर-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ओर से सेन्ट्रल जेल में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. डिंपल, ब्र.कु. दीपाली, ब्र.कु. जगदीश, डॉ. राजकुमार द्वारा सभी कैदियों को बीती बातों से जीवन में कुछ सीख और कुछ अच्छा करने की शिक्षा दी। साथ उपस्थित हैं अनुराधा जी,चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट कम सेक्रेटरी,डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी तथा अन्य कैदी माताएं-बहनें।

कथा सरिता

बोलने वाली गुफा

एक विशाल जंगल था। उस जंगल में खरनख नाम का शेर रहता था। वह शेर जंगल के जानवरों को मारकर अपनी भूख मिटाता था। एक बार उसने शिकार करने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु उसके हाथ कोई भी शिकार नहीं आया। अब वह भूख से परेशान हो गया था। धीरे-धीरे सूरज डूबने लगा, शेर जिस जगह शिकार करने का प्रयत्न कर रहा था वहीं पास में एक गुफा भी थी। खरनख शेर उस गुफा में चला गया और सोचने लगा इस गुफा में कोई ना कोई जानवर अवश्य रहता होगा और वह शाम को अपनी गुफा में ज़रूर आयेगा और जैसे ही वह गुफा में प्रवेश करेगा मैं उसका शिकार कर लूंगा और मेरी भूख मिटा लूंगा। जब तक वह जानवर इस गुफा में नहीं आ जाता तब तक मैं यहीं आराम करता हूँ। वह गुफा एक गीदड़ की थी, उस गीदड़ का नाम दधिपुच्छ था। शाम होने पर गीदड़ अपनी गुफा के पास आ गया और जैसे ही वह गुफा में घुसने वाला था उसने देखा गुफा के पास शेर के पंजों के निशान गुफा के अन्दर जाने के तो हैं परन्तु गुफा से बाहर निकलने के निशान नहीं हैं। दधिपुच्छ नामक गीदड़ समझ गया कि उसकी गुफा में कोई शेर गया तो है परन्तु वह वापस आया या नहीं इसका पता कैसे चलेगा।

गीदड़ ने उपाय सोच लिया। वह गुफा के पास गया और ज़ोर से बोलने लगा- "मेरी बोलने वाली गुफा आज तू शांत क्यों है, तूने मुझसे कहा था कि अगर मैं लौट आया तो तू मुझसे बात करेगी, तू मुझसे बात क्यों नहीं कर रही है?" गीदड़ को बोले हुए कुछ समय हो गया परन्तु गुफा ने कोई जवाब नहीं दिया। गीदड़ ने गुफा के सामने गुफा को संबोधित करते हुए दुबारा फिर से वही बातें कही जो थोड़ी देर पहले की थी। गीदड़ की बातें सुनकर शेर को लगा कि शायद यह गुफा खुद बोलती हो जब भी गीदड़ आता हो तो यह इससे बात करती होगी परन्तु आज मेरे डर से यह बोल नहीं रही है। अगर यह गुफा नहीं बोली तो गीदड़ को शक हो जाएगा और वह इधर से चला जायेगा और मैं भूखा रह जाऊंगा। इसलिए मैं ही बोल देता हूँ और यह सोचकर शेर स्वयं बोलने लगा- "आओ गीदड़ मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी, अन्दर आ जाओ। जैसे ही अन्दर से आवाज़ आई गीदड़ समझ गया कि अन्दर कोई बेवकूफ शेर है जो गीदड़ के गुफा में जाने का इंतज़ार कर रहा है और अन्दर जाते ही उसका शिकार कर लेगा। गुफा के अन्दर से आती आवाज़ सुनकर गीदड़ वहाँ से भाग गया और शेर की गर्जना सुनकर गुफा के आसपास के जानवर भी वहाँ से चले गए। खरनख नामक शेर यह जानता था कि गुफा नहीं बोल सकती फिर भी शेर ने अपनी मूर्खता से उस गीदड़ को भगा दिया जिसे वह खाना चाहता था। गुफा को छोड़कर शिकार की तलाश में चला गया और गीदड़ को अपनी गुफा फिर से मिल गई।

शिक्षा : शेर, गीदड़ और बोलने वाली गुफा की कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि अपनी बुद्धिमानी से आने वाले संकट से बचा जा सकता है।"

ओआरसी-गुरुग्राम(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर में आयोजित तीन दिवसीय 'मैजिक ऑफ मेडिटेशन' कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. ममता दीदी,अलवर। कार्यक्रम में उपस्थित रहे न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वप्न गुप्ता,जीबी पंत हॉस्पिटल, ब्र.कु. विधात्री, ब्र.कु. सुनैना, ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. येशु, ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. फाल्गुनी एवं योगा विशेषज्ञ ब्र.कु. नरेन्द्र। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभा को सम्बोधित किया।

शाहदरा चुंगी-उ.प्र.। मोहन नगर दिव्य धाम सेवाकेन्द्र द्वारा डॉ. मुकेश गोयल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विनीता व ब्र.कु. नवीना।

बरेली-सिविल लाइंस(उ.प्र.)। मानव सेवा क्लब द्वारा सीमा स्मृति साहित्य सम्मान एवं विमोचन समारोह में ब्र.कु. प्रियंका को शान्ति नारी सम्मान से सम्मानित करते हुए कवयित्री शैलजा दुबे, कवयित्री सोन स्वरूप। साथ हैं मानव सेवा क्लब अध्यक्ष सुरेन्द्र बीनू सिन्हा, महासचिव प्रदीप माधवर एवं रमेश गुप्ता।

कामख्यागुड़ी-पश्चिम बंगाल। बसंत उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संपा बहन, ब्र.कु. डॉ. स्वपन, भुवन जी,प्रसिद्ध व्यवसायी व समाज सेवक, प्रिंसिपल मिलि जी,कामख्यागुड़ी कला अकादमी, बकुल जी,गांव के मुखिया, परिमल जी,समाज सेवक एवं द्रुपति मुर्मू जी,समाज सेविका।

पारलाखेमुंडी-ओडिशा। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में जिला मुख्य न्यायाधीश प्रणव कुमार राउतराय, ब्र.कु. सुजाता बहन तथा अन्य अधिकारीगण।

अलीगढ़-रघुवीरपुरी(उ.प्र.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा रघुवीरपुरी शाखा के वार्षिक उत्सव में आमंत्रित स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता ने सभी को ईश्वरीय संदेश दिया। कार्यक्रम में लगभग 47 आरएसएस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

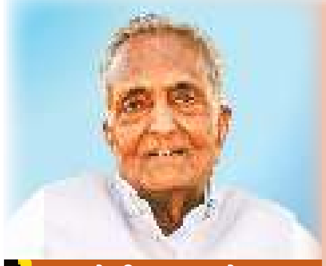

राजयोगी ब्र.कु. रमेश शाह

मातेश्वरी जगत अम्बा सरस्वती के अन्तिम समय के साथ का अनुभव

मुंबई से ब्रह्माकुमार भ्राता रमेश जी कहते हैं कि अप्रैल, 1964 से मम्मा के साथ मेरे व्यक्तिगत अनुभव बहुत ही गहरे और हृदयस्पर्शी थे। मम्मा, अप्रैल, 1964 में मधुबन से सेवाकेन्द्रों पर चक्कर लगाने गयी थीं। मम्मा पंजाब का चक्कर लगाते हुए कानपुर पहुँची। मैं मुम्बई में था। एक दिन अचानक कानपुर से मुझे फोन में बताया कि कल मम्मा को एक डॉक्टर को दिखाया गया तो मम्मा की छाती पर एक गाँठ दिखाई पड़ी। एक अन्य डॉक्टर को दिखाया तो उस डॉक्टर ने कहा कि यह गाँठ कुछ विचित्र लगती है इसलिए मातेश्वरी जी को मुंबई ले जाना चाहिए और वहाँ टाटा हॉस्पिटल में जाँच करानी चाहिए। फिर कानपुर के भाई-बहनों ने कहा, हमने बाबा को बताया तो बाबा ने कहा कि मम्मा पहले आबू आये। मम्मा के आबू जाने के बाद क्या करना है, क्या नहीं करना इसका फैसला बाबा करेंगे।

बीमारी की गंभीरता को जानते हुए मैंने फोन द्वारा मधुबन में बाबा से विचार-विमर्श किया। मम्मा को कानपुर से सीधा मुंबई ले आने का निर्णय लिया गया। दादा विश्वकिशोर भी मधुबन से मुंबई आये। दादा विश्वकिशोर के साथ मिलकर मैंने अपनी पहचान वाले डॉ. जैसवाल जी से टाटा हॉस्पिटल में चैकअप कराने का कार्यक्रम बनाया। चैकअप करने पर डॉक्टर्स ने ऑपरेशन करने का फैसला लिया।

मातेश्वरी जगदम्बा माँ का अलौकिक स्नेह हर बच्चे के लिए एक चुम्बक की तरह रहा। हर एक बच्चे के लिए उससे बिछड़ना कितना कठिन होता है, ये आप समझ ही सकते हैं। लेकिन ड्रामा की भावी को कोई टाल नहीं सकता। उसमें तो स्वयं भगवान भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता। माँ की विदाई के पहले ही सत्य मालूम होने के बावजूद भी दिल पर पत्थर रख प्रभु प्रेम के बीच उस समय की घड़ियां बिताना असहनीय थी, परन्तु सत्यता और स्नेह के बीच संतुलित रहना ही ज्ञान की पराकाष्ठा है।

मम्मा को ड्रामा की भावी पर अटूट निश्चय

ऑपरेशन का समय निश्चित हो गया। दो दिन के बाद फिर हम मम्मा को हॉस्पिटल लेकर गये। ऑपरेशन थियेटर में मम्मा के साथ मेरी लौकिक बहन डॉ. अनिला भी थी, वह आकर जैसे-जैसे समाचार सुनाती थी वैसे-वैसे हम मधुबन में बाबा को सब समाचार साथ-साथ बताते रहते थे। उसके बाद अस्पताल से मम्मा को मुंबई में अपने घर ले आये। ऑपरेशन के बाद मम्मा मुंबई में डेढ़ महीने रहीं।

बाद में हम मम्मा को लेकर मधुबन आये। डॉक्टर ने कहा कि हर तीन महीने में चैकअप कराने के लिए मम्मा को मुंबई लाना पड़ेगा। मम्मा आती रही। 12जनवरी, 1965 को मम्मा को टाटा हॉस्पिटल में फिर दिखाया। जाँच के बाद डॉक्टर ने तीन महीने बाद फिर चैकअप कराने को कहा। मम्मा मुंबई से बैंगलोर गई। वहाँ डेढ़-महीने रहीं, बाद में पुणे आईं। फिर 18 अप्रैल को मम्मा चैकअप के लिए मुंबई आयीं। मम्मा के साथ जमुना दादी और अनिला बहन गईं, मैं नहीं गया क्योंकि उस दिन मैं ऑफिस गया था। जब ऑफिस से वापिस आया तो अनिला बहन का चेहरा उदास और पीला हो गया था। मैंने उनको बाहर गैलरी में ले जाकर पूछा, 'आपका चेहरा पीला क्यों हो गया है? डॉक्टर ने क्या बोला, मुझे बताओ।' वो बात को घुमाने लगी। मैंने कहा, 'सच बताओ, डॉक्टर ने क्या बताया।' उन्होंने कहा, 'तुम सुन नहीं सकोगे।' मैंने कहा, 'मेरी चिन्ता न करो, वास्तविकता का सामना करना ही पड़ेगा, छिपाने से वो टलती नहीं है।' फिर उन्होंने कहा कि मम्मा का कैंसर दावानल(जंगल की आग) की तरह फेफड़े में फैल रहा है। इसका अर्थ डॉक्टर ने बताया है कि मरीज ज़्यादा से ज़्यादा 3-4 महीने तक जी सकेगा।

शील दादी में अव्यक्त बाबा आये और मम्मा की तबियत के बारे में हुई रूबरू बात

दूसरे दिन मैं शील दादी के पास गया और कहा कि वतन में जाकर अव्यक्त बाबा को आवश्यक कार्य के लिए अपने तन में आने का अनुरोध करो। शील दादी ने कहा, 'आपको जो भी सन्देश देना है मुझे दे दो, मैं सुबह उनके पास ले जाऊँगी। बाबा इतना साधारण है क्या कि जब चाहे आप बुलाओ और वो आ जाये!' मैंने कहा, 'बात ऐसी ही है जो मैं आपको सन्देश में भी नहीं सुना सकता इसलिए आप बाबा के पास जाइये, मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाबा ज़रूर आयेगा। बहुत गुप्त और महत्वपूर्ण बात है इसीलिए आप जाइये।' वे ध्यान में गयीं और पाँच मिनट के बाद बाबा उनके तन में आये। बाबा से बातचीत हुई, सारा समाचार बताया। फिर बाबा ने कहा, 'बच्चा, यह ड्रामा की भावी है, टल नहीं सकती। अच्छा, तुमको एक काम करना है, यह बात तुम एक कागज पर मम्मा के लिए लिखो कि डॉक्टर ने आपके जीवन की अवधि केवल 3 महीने ही बताई है।'

मेरे लिए जीवन में सबसे कठिन परीक्षा का पल

आप सोचिए, दुनिया में कौन-सा ऐसा बच्चा होता है जो अपनी माँ को लिखेगा कि माँ तुम्हारा जीवन सिर्फ 3-4 महीने शेष है, उसके बाद आप शरीर छोड़ेंगी? अभी तो मैं बहुत शान्ति से आपको बता रहा हूँ लेकिन उस समय बाबा के सामने ना-ना कहता रहा और आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। मैं कह रहा था, 'बाबा, मेरे से यह काम नहीं होगा, नहीं होगा।' बाबा कहने लगे, 'यह कार्य तुमको ही करना होगा। बाबा तुम्हें शक्ति देंगे।' आज रात को ऑफिस में जाओ, मम्मा को पत्र लिखो और मम्मा के हाथ में ही दो। फिर मम्मा के पढ़ने के बाद उस पत्र को लिफाफे में डालकर मधुबन भेजना। ऊपर लिखना, 'साकार बाबा को ही मिले।' तुम्हारी लिखत साकार बाबा ही पढेंगे और कोई नहीं पढ़ सकेंगे।

मैं ऑफिस गया और लिखना शुरू किया। पाँच-छह बार कोशिश की परन्तु लिखने की हिम्मत ही नहीं आई। आखिर किसी प्रकार मम्मा को पत्र लिखा और उसे एक लिफाफे में बन्द किया। फिर रात के भोजन के बाद, मम्मा के कमरे में गया, वह चिट्ठी मम्मा को दी और कहा, मम्मा यह आपको पढ़नी है। मम्मा ने कहा, यह किसकी चिट्ठी है? मैंने कहा, 'अव्यक्त बाप ने मुझसे लिखवाई है।' मम्मा ने पढ़ा और कहा ड्रामा की भावी। देखिए, मम्मा का ड्रामा पर कितना निश्चय था कि सब कुछ जानते हुए भी कितनी निश्चिन्त और अडोल थीं। चिट्ठी पढ़कर मुझे वापिस की। मैंने उसको आबू में साकार बाबा के लिए भेज दिया। उस महीने की 19 और 20 तारीख को ये दिन मेरे लिए बहुत कठिन परीक्षा के दिन थे जिनका मुझे सामना करना पड़ा। दिल पर पत्थर रख कर मैंने इस पेपर को पास किया।

डॉक्टर के बस की बात नहीं रही, कहा- आप इसे घर ले जायें

उसके बाद रेडिएशन कराने के लिए रोज़ मम्मा को हॉस्पिटल ले जाना पड़ता था ताकि कैंसर और जगह नहीं फैले। अन्तिम बार डॉक्टर के पास मम्मा को अनिला बहन लेकर गई। जाँच करवाई, तब डॉक्टर ने कहा, 'अब कैंसर बहुत बढ़ गया है, दुनिया की कोई भी दवाई अब काम नहीं करेगी, आप कृपया इनको जहाँ चाहे वहाँ ले जाइये ताकि ये शान्ति से अपना शरीर छोड़ सकें।' मम्मा को श्वास लेने में भी बहुत तकलीफ हो रही थी। जब डॉक्टर ने कहा कि उसको जहाँ चाहे वहाँ ले जाइये, तब अनिला बहन को गैरन्टी हो गई कि हम बाजी हार गए। फिर हमने साकार बाबा को फोन पर बताया कि डॉक्टर ने ऐसा-ऐसा कहा है, क्या करें? बाबा ने कहा, 'मम्मा को आबू भेज दो।'

'ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना...'

4जून,1965 को जब मम्मा हमारे घर से मधुबन के लिए विदाई लेने वाली थी तो उस दिन मैं गीत का एक नया रिकार्ड घर लेकर आया था। वो था, 'ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना...।' दादी कुमारका और दादी बृजेन्द्रा बाहर बैठी हुई थीं। दादी जी को मैंने कहा कि यह तीन मिनट का रिकार्ड है, पूरा होने के बाद आप इसको फिर से चलाना, मैं 6 मिनट मम्मा के साथ व्यतीत करूँगा। मैं मम्मा के कमरे में गया और गीत बजना शुरू हो गया। जब दादी जी ने यह गीत सुना तो उसको बन्द कर दिया। दादी जी कहने लगीं कि ऐसा गीत नहीं बजाना चाहिए, क्या समझते हो रमेश जी? मैंने कहा, 'दादी, हम अपने घर से मम्मा को विदाई दे रहे हैं, यह हमारा निमंत्रण है।' इस प्रकार दादी जी को हमने मना लिया। उनको पसन्द नहीं था, फिर भी उन्होंने रिकार्ड चलाया।

मुझे मालूम था कि मम्मा की क्या स्थिति है और भविष्य में क्या होने वाला है। मम्मा ने मेरे हाथ में अपना हाथ रखा और 6 मिनट तक मुझे प्यार भरी दृष्टि देती रहीं, मैं भी दृष्टि लेता रहा। बाद में मम्मा को व्हील चेयर पर नीचे लेकर आये और कार में बिठाया। ट्रेन में भी मम्मा को विदाई दी गई। विदाई के समय पर मम्मा की आँखों में प्रेम के आँसू भरे थे। आगे क्या होगा यह मम्मा को भी मालूम था और मुझे भी। अन्य यज्ञवत्स यह सोच भी नहीं सकते थे कि मम्मा हमारा साथ छोड़ जायेंगी। फिर मम्मा को जमुना दादी, अनिला बहन और ब्रह्मा बाबा के लौकिक बेटे नारायण भाई के साथ आबू भेज दिया।

बाबा से इससे पहले कुछ नहीं मांगा... पर प्यार में इच्छा को रोक नहीं पाया

अगले दिन गुरुवार था। उस दिन शील दादी भोग लेकर जा रही थीं। उनको हमने कहा कि बाबा के पास हमारा एक सन्देश ले जाना कि बाबा हमने आज तक आपसे कुछ भी नहीं माँगा। आज एक चीज़ माँग रहा हूँ कि जब मम्मा शरीर छोड़े उस समय मैं वहाँ हाज़िर रहूँ। शील दादी एकदम बोल पड़ी, क्या आप इतने नास्तिक बन गए? मम्मा कभी शरीर छोड़े, ऐसा कभी हो सकता है? ऐसी बातें करते हो? मैंने कहा, आप सिर्फ बाबा को मेरा सन्देश दे देना। अगर मम्मा शरीर छोड़ने वाली नहीं होगी, तो बाबा बता देंगे कि मम्मा शरीर नहीं छोड़ने वाली है और यह भी बता देंगे कि कैसे बाबा उनको आबू में नयी-नयी दवाई देंगे और मम्मा कैसे ठीक हो जाएंगी। यह बात शील दादी को भी अच्छी लगी। वे सन्देश लेकर गईं। बाबा ने कहा, ड्रामा को मंजूर है तो रमेश वहाँ पहुँच जायेगा। नीचे आने के बाद शील दादी ने कहा, बाबा ने तो यह नहीं कहा कि आपका सन्देश गलत है। ड्रामा को मंजूर है तो रमेश वहाँ पहुँच जायेगा, तो इसका अर्थ क्या है? मैंने कहा, मुझे क्या मालूम, यह तो चतुर सुजान बाबा ही जाने।

हुआ भी वैसा ही। जैसा बाबा का संदेश था। और हम दादी, निर्वैर भाई सहित मम्मा को अंतिम विदाई देने के लिए फूल, चंदन के हार लेकर पहुंच गए और बाबा ने हमारी इच्छा पूरी की। और हम सभी प्यारी मम्मा को भावभीनी पुष्पांजलि अर्पित की।

योग अनुभव का विषय है, न कि प्राप्ति का...

– ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

परमात्मा ने हम सभी को, जो इतने समय से अभ्यास करते हैं या करते होंगे, उन सबको किसी भी बात में योग का ये अनुभव होगा, उसका कभी डिस्क्रिप्शन नहीं दिया, उसकी कभी परिभाषा नहीं दी, उसका कभी मूल्यांकन नहीं बताया। कहने का मतलब है कि इस योग में जहाँ आत्मा, परमात्मा को अनुभव करना चाहती है, स्वयं के मूल गुण के आधार से। क्योंकि आत्मा का मूल गुण, मूल स्वभाव एक तरह से शान्ति, प्रेम, पवित्रता, आनन्द का ही तो है और परमात्मा उसका सागर है। तो क्या परमात्मा की उस स्थिति को, जो परमात्मा जिस अवस्था में हमेशा है उसको अनुभव करने के लिए हम सबको कोई ऐसे मूल्यांकन की आवश्यकता पड़नी चाहिए या सिर्फ हमको अनुभव करना चाहिए? परमात्मा हमको हमेशा एक बात सिखाते हैं, कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ, शान्ति का सागर हूँ, प्रेम का सागर हूँ, तुम सबको सागर के साथ जुड़ने के लिए अपने आप को ज़ीरों बनाना पड़ेगा। क्योंकि सागर इस दुनिया में वही है, बड़ा वही है, सबके लिए सोचता वही है जिसके अन्दर विशाल दिल, विशाल हृदय हो। जिसका ज़ीरों निगेटिविटी कहा जाता है, मतलब ज़ीरों परसेन्ट भी कोई किसी से अनबन नहीं हो, बुरा नहीं है, सबकुछ परफेक्ट है।

वैसे परमात्मा हमको कहते हैं तुम ज़ीरों बनो। जितना ज़ीरों हम बनते जायेंगे, उतना परमात्मा को परमात्मा के हिसाब से हम अनुभव करते जायेंगे और वो जो योग का अनुभव होगा, वो हम सबको इस दुनिया के अनुभव से बहुत दूर ले जायेगा। तो समझने का विषय है कि ज़ीरों का मतलब है इस दुनिया की किसी भी चीज़ में, कहीं भी मैं, अपने आप में, किसी भी बात में, कुछ भी राय देने के लिए रेस्पॉन्सिबल नहीं हूँ या मैं उस लायक नहीं हूँ। क्योंकि ये प्रकृति पुरूष और परमात्मा का खेल है। यहाँ जो कुछ भी घट रहा है, वो नैचुरल है। उस पर सोचना, उस पर अपनी बुद्धि का निर्णय देना, उस पर उन बातों का अमल में लाना जो हमारे दायरे से बाहर है, ये सब करना हमारे छोटे-छोटे देहभान और देह-अभिमान को शो करता है, बताता है। ऐसी अवस्था वाले परमात्मा को उस हिसाब से अनुभव नहीं कर सकते, जैसा वो है।

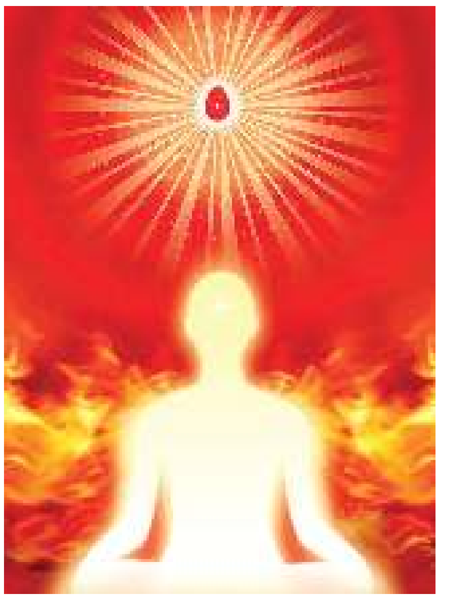

इसलिए शिवबाबा हमको रोज़ मुरली में सिखाते हैं कि देह-अभिमान छोड़ो, देही अभिमानी बनो। देही अभिमानी आत्मा को परमात्मा के सिवाए कुछ याद ही नहीं आएगा क्योंकि वो अपने आप में परिपूर्ण हो जाएगा। आत्मा अपनी अवस्था से बाहर ही तब होगी जब तक वो अपने आपको इस शरीर से मुक्त नहीं करती। शरीर में रहते हुए शरीर से मुक्त करना।

इसीलिए उस परमात्मा की अनुभूति हमको तब अच्छे से होगी जब हम रोज़ ये मानेंगे कि मैं ज़ीरों हूँ, सिर्फ और सिर्फ एक ज़ीरों। जिसका न माइनस है, न प्लस है। न कम है, न ज़्यादा है। न कमेंट है, न किसी की तारीफ है। सबकुछ बैलेंस है, ज़ीरों है। जिसका सब कुछ बैलेंस है वो उस परमात्मा से अपने आपको बैलेंस बनाने में मदद करेगा। इसलिए शिव परमात्मा की शक्ति अपने अन्दर लाने के लिए हमको रोज़ ज़ीरों बनने का अभ्यास बढ़ाना पड़ेगा। तब जाकर हम उस अनुभूति में खो पाएंगे।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं सीए हूँ पर मेरा न ही जॉब में मन लग रहा है और न ही योग में। तो मुझे समझ नहीं आ रहा है कि अपने जीवन में क्या डिसीज़न लूं? ज्ञान मार्ग में बहुत आगे जाना चाहती हूँ पर प्रोग्रेस भी नहीं हो रही है।

उत्तर : सीए वालों को काम ज़्यादा करना पड़ता है ना। इनकी सारे ब्रेन की जो एनर्जी है वो उस जॉब में खत्म हो जाती है। और मैं एक बात बहुत बार कह रहा हूँ कि योग अभ्यास के लिए भी ब्रेन को बहुत एनर्जेटिक, बहुत एफिशिएंट(कुशल)होना ही चाहिए। इसलिए योग में मजा नहीं आ रहा है। और योग में मन नहीं लगता तो फिर मन दुविधा में आ ही जाता है। इधर जाऊं या उधर जाऊं! लेकिन उधर जाने में भी बहुत सुख नहीं है। मैं तो हज़ारों केस देख रहा हूँ। उधर जाकर भी लोग बहुत पछता रहे हैं। आप इतना करो, आप अपनी जॉब को ऐसे सेट करो, मैनेज करो कि सवेरे आप उठ सकें। खुली हवा में चले जाना। छत हो तो छत पर चले जाना। अच्छा चिंतन करना, बाबा से दो बातें करना और दिन के लिए कुछ प्लैन बना लेना, कुछ अच्छे पुरूषार्थ का। कुछ दिन ये करने से मन स्पिरिचुअलिटी से भरपूर हो जाएगा और ये समस्या खत्म हो जाएगी।

प्रश्न : मेरी सोच ये है कि आज के टाइम में हर लड़की को फाइनेंशली भी इंडिपेंडेंट होना चाहिए। पर बाबा जो नौकरी की टोकरी न उठाने की बात करते हैं कुमारियों को, तो क्या मेरी ये बात बाबा की श्रीमत के अगेंस्ट है?

उत्तर : अब भगवान क्या कहता है और मनुष्य क्या सोचता है। क्योंकि पैसा ऐसी चीज़ है जिससे मनुष्य अपने को भरपूर और इंडिपेंडेंट महसूस करता ही है और इनका विचार भी ठीक है। लेकिन भगवान तो कहता है जब मैं आया हूँ, तुम्हें बड़ी-बड़ी से जॉब दे रहा हूँ और खज़ाने तो इतने दे रहा हूँ कि ये सब खज़ाने तो सब छोटे लगते हैं। हमारी कितनी बहनें अच्छी-अच्छी जॉब छोड़कर या अच्छी-अच्छी क्वालिफिकेशन लेकर सेवाओं में लग गई हैं। धन की उन्हें कोई कमी नहीं हो रही है। एक जगह की बात मैं आपको बताता हूँ, पूना के एक सेंटर पर मैं गया। बहनों ने कहा कि दादी आ नहीं रही हैं तो आप ओपनिंग कर दो। चार बहनें थी, छोटी-छोटी सी दिख रही थी। तो मैंने कहा कि अरे बहनों का परिचय तो करा दो, जो इंचार्ज थी। परिचय होने लगा तो एक ने बीटेक किया, एक ने एमटेक किया और एक ने एमबीए किया। उनमें भी एक सीए थी। मैंने कहा अरे आप इतने पढ़े-लिखे समर्पित हो गये। मैंने ऐसे ही कहा कि जॉब क्यों नहीं करती हो, इतनी अच्छी क्वालिफिकेशन तुम्हारे पास, यहाँ रहकर क्या करोगी? मुस्कुराने लगी कि जॉब करके छोड़ के आ गये हैं। यही जीवन है। यही सच्चा जीवन है। डिलाइटफुल (आनंदमय) लाइफ। तो देखिए उन्हें कोई कमी नहीं है, सुन्दर मकान बना लिया है। और जब हम सेवा करते हैं तो बाबा हमें कोई कमी रहने नहीं देता है।

प्रश्न : मेरे पास दो बच्चे हैं और दोनों ही मानसिक रूप से अपंग हैं। उनका मन ठीक से कार्य नहीं करता या ब्रेन ठीक से कार्य नहीं करता। तो इसके लिए क्या समाधान हो सकता है? बहुत सारे इलाज हमने कराये हैं लेकिन दोनों बच्चों की हालत ज्यों की त्यों बनी हुई है।

उत्तर : ये समस्या संसार में बढ़ती जा रही है। मानसिक रोग बहुत बढ़ रहे हैं। मुझे लोग कहते हैं कि पहले साइकेट्रीक डॉक्टर के पास कोई-कोई जाता था। अगर कोई जाता था तो छुप-छुप कर जाता था कि कोई देख ना ले। आजकल वहाँ भी भीड़ मिलने लगी है। अभी कोई मुझे बता रहा था तो मानसिक समस्याएं सचमुच बढ़ती जा रही हैं और इसका सीधा-सा कारण जो मैं बिल्कुल बिना हिचक के सभी को बताना चाहता हूँ। अति पाप कर्म। मनुष्य दूसरे को परेशान कर रहा है। हर्ट कर रहा है, सोने नहीं दे रहा है दूसरे को। टेंशन में ला रहा है, बुरे तरीकों से धन कमा रहा है। ये जो पाप कर्म हैं ये कहीं न कहीं ब्रेन को इफेक्ट कर रहा है। मन को बहुत दुर्गति की ओर ले जा रहा है। सच तो ये है कि अगर मनुष्य ने पाप कर्म छोड़कर पुण्य कर्मों की राह नहीं अपनायी, ये मानसिक समस्याएं समाप्त नहीं होंगी। देखो जिनके घर में जन्म लिया उन दोनों बच्चों ने तो उनसे भी उनके कार्मिक अकाउंट जुड़े हुए हैं। किसी जन्म में सबने मिलकर ये काम किए होंगे। अब उसके लिए भगवान से क्षमा-याचना करनी है और उन सबसे भी क्षमा-याचना करनी होगी जिन्होंने इनको कष्ट दिया, या जिनको इन्होंने कष्ट दिया है। दोनों चीज़ इम्पोंटेंट हैं। इसके केस में प्राय ये है कि इनके द्वारा बहुतों को कष्ट मिला है। ये दोनों अगर क्षमा-याचना करें तो बहुत मदद मिल सकती है। अगर बच्चे छोटे हैं तो इनके माँ-बाप ये काम करेंगे। और बच्चों से क्षमा-याचना करेंगे क्योंकि इनका भी उनसे कार्मिक अकाउंट है। इन्हें राजयोग के पथ पर आ जाना चाहिए क्योंकि समस्या का यदि एक ज्वलंत समाधान चाहते हैं तो इन्हें दोनों बच्चों के लिए एक घंटा योगदान करना पड़ेगा रोज़। उन्हें पवित्र भोजन भी खिलाना पड़ेगा। एक घंटा एक बच्चे के लिए और दूसरा घंटा दूसरे बच्चे के लिए। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और जैसे शिव बाबा की किरणें मुझ में आ रही हैं। एक घंटा ये बहुत सुन्दर अभ्यास, और समर्पित कर दें उस आत्मा को, सकंल्प करें ये इसके लिए इससे क्या होगा धीरे-धीरे उसके ये विकर्म विनाश होंगे। जिनके कारण उनकी ये मानसिक स्थिति बनी है। दोनों बच्चों के लिए एक-एक घंटा। चार्ज करके दूध, पानी, भोजन जो भी उनको देना है उसमें भी यही विधि अपनायेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सात बार संकल्प करेंगे दृष्टि देकर लेकिन इनके ब्रेन को एनर्जी भी देनी है। दस मिनट सवेरे और दस मिनट शाम। फिर दूसरे के लिए भी यही दस मिनट सवेरे, दस मिनट शाम। चालीस मिनट चाहिए। माँ अगर डेडिकेट करे, अगर राजयोग के पथ पर आ जाये, अपनी शक्तियों को बढ़ाए तो उनके ब्रेन को एनर्जी देकर नॉर्मल किया जा सकता है। विधि हम बताते ही रहते हैं। हाथों को मलते हुए मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, तीन बार याद करके उनके ब्रेन पर दोनों हाथ रखें। एक मिनट और इनसे इनका ब्रेन नॉर्मल हो जाये। फिर दुबारा दस बार ऐसे सवेरे-शाम। ये विधि अगर अपनाई जायें तो बच्चों की स्थिति में कुछ सुधार आ सकता है। अन्यथा क्या होगा जैसे-जैसे इनकी आयु बढ़ेगी, उनका हाल और बिगड़ेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

साइलेंस... एक पॉवरफुल मेडिसिन

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि हम चतुर्भुज हैं, और जितनी बार ये स्वमान को हम अन्दर में याद भी करते हैं उतनी बार हम उस संस्कार को जागृत करते हैं। और इस तरह से बाबा ने जब कहा कि स्वमान की माला दी है तो इस तरह से रोज़ स्वमान लेकर उसके स्वरूप बनो। अब आगे पढ़ेंगे...

तो जो देहभान के संस्कार हैं उसको सहजता से समाप्त कर सकेंगे। इसलिए अशरीरी के पहले विदेही बनना बहुत आवश्यक है। जब तक विदेही नहीं बनेंगे, रहना देह में ही है, चलती थी तो जैसे धरनी को भी तकलीफ नहीं होनी चाहिए, इतना दबे पाँव चलते थे। आज कई लोग चलते हैं तो धप-धप करके, आवाज़ करते चलते हैं। धरनी को कितना कष्ट देते हैं।

अब फरिश्ता अर्थात् लाइट। हर बात में लाइट रहो। अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें तो हर बात में बिंदी लगाना आना चाहिए। किसी ने कुछ कहा बिंदी लगाओ, न्यारे हो जाओ। अशरीरी हो जाओ। जो ब्राह्मणों के स्वभाव-संस्कार में ये बात थी कि उसने कुछ कहा फीलिंग आ गई, दुःख हो गया, वो बात अन्दर चलती रही, वो ब्राह्मणों का पार्ट अब पूरा

न मेरे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त हो और न किसी का दुःख मैं लूं...

कर्म भी सबकुछ करना है, भौतिकता के बीच में रहना है लेकिन विदेही। देही अभिमानी और विदेही में ये अंतर है कि देही अभिमानी आत्मा के सात गुणों की ऊर्जा को कर्म में लाना और विदेही माना कोई न कोई श्रेष्ठ स्वमान की ऊर्जा को व्यावहारिक रूप में ले आना। और उस रीति से जीवनमुक्त स्थिति, किसी के भी ऊपर हम आधारित न हों। इसके बिना काम नहीं चलेगा, सबके बिना काम चल सकता है। आज वो व्यक्ति है, कल शरीर छूट गया तो! भावार्थ ये है कि बाबा हम बच्चों को सबसे न्यारा कर देता है और सबका प्यारा भी। तो जितना न्यारा रहेंगे उतना प्यारा।

दादी सुनाती थीं कि बाबा के पास जाते थे बातें सुनाने, जब बाबा को सुनाते थे अपनी बात तो लगता था कि बाबा सुन नहीं रहा है। फिर जब पूछते थे तो बाबा बता देते थे कि ये बात थी तुम्हारी। मतलब बाबा सारी बात सुनने के बाद भी डिटैच रहते। क्योंकि बाबा अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहते थे। बातों का प्रभाव उनके मन पर नहीं पड़ता था। और इसीलिए जीवनमुक्त स्थिति में रहे। तब जाकर डेड साइलेंस, यानी एक देह से डिटैच। अशरीरी। अशरीरी होकर परमधाम में साथ बैठकर वहाँ न कोई संकल्प-विकल्प चलते हैं, न कोई मन के अन्दर बात सूक्ष्म में भी स्थान रखती है। और बहुत सहज हम जैसे विकर्मों का विनाश करने का अनुभव करते हैं। ज्वाला जलती है और उस ज्वाला से आत्मा का शुद्धिकरण हो रहा है। उस बीज रूप बाबा से हम भी भरपूर हो रहे हैं। हमें भी ऐसी बाबा की सकाश प्राप्त हो रही है जिस सकाश से हम भरपूर हो रहे हैं अन्दर से। और भरपूर होकर सम्पन्न बनते जा रहे हैं, ये है अशरीरीपन की स्थिति।

बीज स्वरूप माना एक भरपूरता की अनुभूति। बीज के अन्दर जैसे सारा वृक्ष समाया हुआ है, इसी तरह हम आत्माएं भी भरपूरता की स्थिति में स्वयं को अनुभव करें। लेकिन शरीर के भान से एकदम न्यारे रहें। जैसे बाबा के लिए साकार में बताती हैं दादियां कि जब बाबा चलता था ना, या मम्मा भी जब हो गया यानी अब तक की जो हरकतें थी हमारी ये समाप्त हो गईं। अब परिपक्व स्थिति में आये। अब फरिश्ता स्वरूप लाइट। हर कर्म करो लेकिन लाइट। न मेरे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त हो और न किसी का दुःख मैं लूं। हल्के होकर हर कर्म करो यही फरिश्ता बनना है। अगर यहाँ फरिश्ता नहीं बने और वही ब्राह्मण में रहे, वो ब्राह्मण माना जो संघर्ष है, कहाँ न कहाँ अपने संस्कारों के साथ संघर्ष कर रहे हैं। परिस्थितियों के साथ संघर्ष कर रहे हैं, व्यक्तियों के साथ संघर्ष हो रहा है। तो संघर्ष वाला कहाँ जायेगा? त्रेता में जायेगा ना! इसलिए ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो जो फरिश्ता बनेगा, वही देवता में जायेगा, सतयुग में जायेगा। अगर संघर्ष में रहे फरिश्ता नहीं बने तो सतयुग कैंसिल और सीधा त्रेता में। यानी दो करोड़ आत्मा के बाद हमारा नम्बर लगेगा। तो दो करोड़ के बाद, 1250साल के बाद मुझे नीचे उतरना होगा। कितने जन्म के बाद? 8 जन्म बाद होगा नीचे आना। मंजूर है?

देवबंद-शिव चौक(उ.प्र.)। 20 दिवसीय तिरपुर मां बाला सुंदरी देवी मेले में लगाई आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग प्रदर्शनी का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए कुंवर बृजेश सिंह,मंत्री पीडब्ल्यूडी,उ.प्र.। साथ हैं विजय त्यागी,प्रतिनिधि ब्लॉक प्रमुख, ब्र.कु. पिंकी,छुटमलपुर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कविता तथा अन्य।

मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। राजयोगिनी ब्र.कु. रतनमोहिनी दादी के तेरहवीं पर आयोजित कार्यक्रम में आये विधायक पंकज पटेल को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

सूरतगढ़-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए इनर विंग की अध्यक्षा श्रीमती संगम,सेक्रेटरी, श्रीमती परविंदर,कोषाध्यक्ष, श्रीमती सोनू,मात्र छाया क्लब की अध्यक्षा एवं वार्ड पार्षद श्रीमती संतोष गिरी, सांता किड्स स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती ज्योति मुंजल, ब्र.कु. रानी एवं ब्र.कु. पुष्पा।

कुराली-पंजाब। कुराली के गांव स्यालवा में 'जीवन जीने की कला' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में गांव वासियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. स्वराज बहन।

झुंझुनूं-राज.। मुकुंदगढ़ स्थित ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला में सात दिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. साक्षी, ब्र.कु. किसन लाल, ब्र.कु. रामजी लाल, अध्यापक ग्यारसी लाल तथा अन्य।

अव्यक्त मुरली 28-03-2002 (पहेली-18)2024 -25

ऊपर से नीचे

1. इस वर्ष को निर्माण, ... वर्ष और व्यर्थ से मुक्त होने का मुक्ति वर्ष मनाओ।(3)
4. निर्माणता ऐसी चीज़ हैं, कैसा भी कोई होगा, चाहे बिजी हो, चाहे कठोर दिल वाला हो, चाहे क्रोधी हो लेकिन निर्माणता आपको सर्व द्वारा ...... दिलाने के निमित्त बन जायेंगी।(4)
8. शिवबाबा जाने ओर ब्रह्मा बाबा जाने क्यों कि बापदादा को तरस बहुत पड़ता है लेकिन ऐसे बच्चे बापदादा के ..... के संकल्प को टच नहीं कर सकते, कैच नहीं कर सकते। (3)
9. कभी भी यह नहीं सोचना कि जो हम कर रहे हैं, जो हो रहा हैं वह बापदादा नहीं देखते हैं। इसमें कभी ...... नहीं होना।(4)
10. शरीर भी पवित्र, आत्मा भी पवित्र और प्रकृति भी पवित्र ....., सुखदाई...निश्चय की कलम से अपना भविष्य चित्र सामने ला सकते हैं।(3)
11. बापदादा कई बार याद दिलाते हैं कि बाप आपके लिए सौगात लाये हैं तो सौगात क्या लाये हैं? सुनहरी दुनिया, ... दुनिया की सौगात लाये हैं।(5)
12. कई बच्चे ऐसे समझते हैं कि ..... में तो पता ही नहीं पड़ेगा कौन क्या था, अभी तो मौज मना लो। अभी जो कुछ करना है कर लो। कोई रोकने वाला नहीं, कोई देखने वाला नहीं। लेकिन यह गलत हैं।(4)
15. आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों के मस्तक में चमकती हुई तीन लकीरें देख रहे हैं। एक लकीर है प्रभु ..... की, दूसरी लकीर है श्रेष्ठ पढ़ाई की और तीसरी लकीर है श्रेष्ठ मत की। (3)
17. हीरे मोती मुख से निकलें। अभिमान से बोलने से किसको दुःख क्यों देते हो! दुःख के खाते में .....तो होगा ना। आप समझते हो क्या हुआ बोला दिया, ऐसे ही तो है। लेकिन दुःख के खाते में ..... होता है।(2)
20. दीपक, चिराग, दीवा।(2)

बायें से दायें

1. बापदादा ने देखा है कि बोल-चाल में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सेवा में भी एक दो के साथ ..... स्वभाव विजय प्राप्त करा देता हैं।(3)
2. अभी 9 लाख भी नहीं हुए हैं। तो विश्व कल्याणी आत्मायें विश्व की सर्व आत्माओं का ..... कब करेंगे? (3)
3. श्रीमत पर चलना यह भी एक सब्जेक्ट हे। तो श्रीमत पर चलने की सब्जेक्ट में ..... हुए इसलिए फर्स्ट नम्बर वालों को बापदादा ने अपने तरफ से 25 मार्क्स बढ़ाई।(2)
5. अन्त में जब आप अपना पोतामेल ड्रामा अनुसार अपने ही ..... की टी.वी. में बापदादा दिखायेंगे, तो उसमें इस श्रीमत की मार्क्स कट नहीं करेंगे।(2)
6. बापदादा ने देखा है कि सेवा से ..... अच्छी हैं, चांस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हें।(3)
7. हे! रहमदिल, विश्व कल्याणी बच्चे, अपने दुःखी, अशान्त भाई-बहनों पर रहम नहीं आता? उमंग नहीं आता, दुःखमय ..... को सुखमय बना दें, यह उमंग नहीं आता?(3)
10. ऊँचे-ते-ऊँचे भगवान के बच्चे हो, तो आपका तो एक-एक सेकण्ड का टाइम टेबुल फिक्स होना चाहिए। क्यों नहीं बिन्दी लगती, उसका कारण क्या? ब्रेक ..... नहीं हैं।(5)
11. माया अपना अति का पार्ट बजा रही है, प्रकृति भी अपना अति का पार्ट बजा रही है। ऐसे ..... पर ब्राह्मण बच्चों का अपने तरफ अटेन्शन भी अति अर्थात् मन-वचन-कर्म में अति में चाहिए। (3)
13. भाषण के समय आपके बोल, आपके मस्तक से, ... से, सूरत से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म प्यार की अनुभूति अच्छी हो रही थी।(3)
14. .....पालना का भाग्य सिवाए आप ब्राह्मण आत्माओं के और किसी को भी प्राप्त नहीं होता हैं।(2)
16. पवन अनिल(2)
18. आजकल का सब बातों में यह विशेष स्लोगन है-"सब ..... है"-यह अलबेलापन हैं।(3)
19. सरिता, तटिनी।(2)
21. बापदादा कहते है कि एक मास अपना एकाउन्ट अभी से रखो और अगर अभी भी एक मास एक्यूरेट, नम्बरवन वाला एकाउन्ट रखेंगे, तो बापदादा उसकी ..... कट नहीं करेंगे।।(2)
22. आज अमृतवेले से बच्चों के दो संकल्पों से ..... बापदादा के पास पहुँची।(2)

17/24- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 11-03-2002)

ऊपर से नीचे: 1.अभिमान, 2.माला, 3.सत, 4.साक्षात्कार, 8.केक , 10.तख्तनशीन, 11.विनाश, 12.महाराज, 13-.साकार, 14.टीचर, 19.दिन।

बायें से दायें: 1.अपमान, 3.सम्पूर्ण, 5.गीत, 6.रक्षा, 7.मान, 9.पत्र, 10.तकदीर, 11.विचित्र, 12.महान, 13.सामना, 15.शक्ति, 16.नज़र, 17.घर, 18.जन्म, 19.दिल, 20.मधुबन, 21.दृढता।

शिक्षा मंत्री ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शान्तिवन में शिक्षाविदों के महासम्मेलन के अवसर पर बोले...

भारत आध्यात्मिक आधार पर बनेगा विश्व की महाशक्ति: शिक्षा मंत्री

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शान्तिवन में शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित शिक्षकों के महासम्मेलन के शुभारंभ के पहले पहलगाम में हुए आंतकी हमलों में दिवंगत लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
'समग्र कल्याण के लिए शिक्षा' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि भारत एक दिन आध्यात्मिक आधार पर विश्व की महाशक्ति बनेगा। भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में लागू की गई लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ ने 88 साल पहले मूल्य शिक्षा देने के लिए पहल शुरू कर दी थी। संस्थान ने शिक्षा को अध्यात्म की पद्धति बनाई। फिज़िक्स, कैमिस्ट्री, हिस्ट्री पढ़ने से मनुष्यों की दक्षता बढ़ती है, लेकिन मनुष्य तैयार नहीं होता है। श्रेष्ठ मनुष्य बनने के लिए शिक्षा के साथ आध्यात्मिक-मूल्य शिक्षा भी ज़रूरी है। जो समाज की मूलभूत शिक्षा है वो ब्रह्माकुमार भाई-बहनें आठ दशकों से प्रैक्टिस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य यदि जीवन को पटरी पर रखता तो शायद आज विश्व का पर्यावरण इतना खराब नहीं होता। भारत के सामान्य लोगों और जीवन में आध्यात्मिकता भरी पड़ी है। बता दें कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए देशभर से हज़ारों से अधिक शिक्षाविद पहुंचे हैं।

लोगों का जीवन मूल्यों से जुड़ा हो

उन्होंने कहा कि जब भारत आज़ादी की शताब्दी मना रहा होगा, वहीं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान लोगों को शिक्षा के माध्यम से नया दिग्दर्शन देने के लिए समर्पित रूप से लगा होगा। ब्रह्माकुमारीज़ की वैल्यू एजुकेशन के प्रति प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से झलकती है। आज हम शिक्षा प्रभाग की नई इनीशिएटिव की शुरूआत कर रहे हैं जो आज के समय के लिए बहुत ज़रूरी है। 'लीप प्रोग्राम' का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जिनका जीवन मूल्यों से जुड़ा हो।

संगठन ने 1937 में आध्यात्मिक शिक्षा की रखी नींव

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रधान ने कहा कि 1937 के उस दौर में अखंड भारत देश का एक तबका आज़ादी की लड़ाई में लगा था वहीं पूज्य ब्रह्माबाबा ने सपना देखा कि यदि हमारा देश आज़ाद होगा तो उसका क्या भविष्य होगा। देश आज़ाद हो जाने से स्वराज मिल सकता है, स्वराज्य नहीं आ जाएगा। इसलिए उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय की नींव रखी।

माउंट आबू आत्मचिंतन की भूमि

प्रधान ने कहा कि मैं पिछले 25 सालों से ब्रह्माकुमारीज़ को जानता हूँ। मनुष्य लोभ, मोह, अहंकार में फँसा रहता है लेकिन उसी मनुष्य को देवता बनाने का एक माध्यम चाहिए जो यह संगठन कर रहा है। आज मैं उनकी तपस्या के प्रति नमन करता हूँ। माउंट आबू सदियों से आत्म-चिन्तन और आध्यात्मिक शिक्षा का पावन स्थान रहा है। यहाँ ऋषि-मुनि और साधकों ने गहराई से साधना करके सिद्धी प्राप्त की है। इस दौरान शिक्षा मंत्री ने पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी रतनमोहिनी दादी को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके मानवता के कार्यों को याद किया। प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, कार्यकारी सदस्या ब्र.कु. सुप्रिया ने भी सम्बोधित किया। मंच का कुशल संचालन राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुमन बहन ने किया।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार...

- अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि राजयोग शिक्षा को अपनाकर आज लाखों लोगों का जीवन पूरी तरह बदल गया है। राजयोग के अभ्यास से मन शक्तिशाली और सशक्त बन जाता है।
- अतिरिक्त महासिचव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे समाज और देश में बदलाव आएगा।
- जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने कहा कि मैं लोकसभा क्षेत्र की समस्त जनता जनार्दन की ओर से आप सभी शिक्षाविदों का सम्मान-स्वागत करता हूँ।
- उदयपुर के महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय एवं प्रौद्योगिकी कुलपति डॉ. अजीत कुमार,कर्नाटक ने कहा कि अध्यात्म से ही व्यक्ति का संपूर्ण विकास होता है। आज यह सभी के लिए बहुत ज़रूरी है।
- केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,दिल्ली के कुलपति श्रीनिवास वाराखेड़ी ने कहा कि मूल्य शिक्षा के बिना भौतिक शिक्षा अधूरी है।
- दिल्ली टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. सुरेश कुमार ने युवा पीढ़ी में अनुशासन और देशभक्ति की भावना पर ज़ोर दिया।
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी यूनिवर्सिटी सीकर के वाइस चांसलर प्रो. डॉ. अनिल कुमार राय ने कहा कि केवल कम्प्यूटर शिक्षा से चरित्रवान संस्कारों का निर्माण नहीं हो सकता।
- गुरुग्राम यूनिवर्सिटी की डॉ. अमरजीत कौर ने शिक्षकों से दायित्वों के प्रति निष्ठावान रहने का आह्वान किया।

आत्मा का संबंध परमात्मा से जोड़ना ही योग

रायपुर-छ.ग.। योग-आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष रूप नारायण सिन्हा के शपथ ग्रहण समारोह में राज्य के अनेक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक संगठनों के साथ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साधकों ने भी बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। समारोह में मुख्यमंत्री के साथ-साथ महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल रमेश बैस, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, युवा खेलकूद और राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा सहित अनेक विधायक, संत महात्मा व सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस अवसर पर जीवन में ब्र.कु. सविता,रायपुर ने बतलाया कि योग शब्द का अर्थ होता

है जोड़ना। अध्यात्म के सन्दर्भ में आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ना ही सच्चा योग है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आसन या प्राणायाम ज़रूरी हो सकते हैं लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों पर जीत पाने और मन को तनाव मुक्त रखने के लिए राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि जैसे बैटरी को चार्ज करने के लिए पॉवर हाउस से सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता होती है। ठीक वैसे ही आत्मा में शक्ति भरने के लिए उसका सम्बन्ध परमात्मा के साथ जोड़ने की ज़रूरत होती है। राजयोग हमें सकारात्मक सोच बनाने में मदद करता है।

झोटवाड़ा में आध्यात्मिकता की नई सुबह- ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र का शुभारंभ

झोटवाड़ा-जयपुर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा झोटवाड़ा स्थित नवनिर्मित सेवाभवन का अत्यंत भव्य और दिव्य उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी विशिष्ट हस्तियाँ उपस्थित रहीं, जिन्होंने कार्यक्रम की गरिमा को और भी बढ़ा दिया। कार्यक्रम की शुरूआत अतिथियों के भव्य स्वागत एवं दीप प्रज्वलन से की गई। राव राजेन्द्र सिंह,सांसद,जयपुर ग्रामीण ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ईश्वर के शुभ विचार को चरितार्थ करने का दिव्य कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने अपने आशीर्वचन देते हुए कहा कि 'प्रभु मन-भावन भवन' परमात्मा द्वारा सभी को दी गई अमूल्य सौगात है जो ईश्वरीय सौगात है, जो ईश्वरीय संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बनेगा। इस समय सर्व आत्माओं को सद्गति देने वाले निराकार परमपिता परमात्मा सभी को जीवनमुक्त बनाने के लिए इस धरा पर अवतरित हुए हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त मुख्य

सचिव एवं मल्टीमीडिया प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने अपने मन के उद्गार व्यक्त करते हुए

कहा कि परमात्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप है जो हम सभी आत्माओं का पिता है, राजयोग द्वारा हम उससे जुड़कर अपने जीवन को देवतुल्य बना सकते हैं। प्रो. डॉ. अल्पना कटेजा,कुलपति,राजस्थान विश्वविद्यालय ने कहा कि इच्छाओं से जीवन में निराशाओं का कोलाहल बढ़ता जा रहा है जिसे ओमशान्ति के मंत्र से हल कर सकते हैं। रत्ना कुमारी,संस्थापक,रानी रत्ना कुमारी फाउंडेशन ने कहा कि राजयोग को जन-जन तक पहुँचाने का दिव्य कर्त्तव्य ब्रह्माकुमारी बहनें वर्तमान में कर रही हैं। जिनका पवित्र जीवन एवं समर्पणता सभी के लिए प्रेरणादायी है। राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी,आध्यात्मिक प्रभाग प्रमुख ने लयबद्ध संचालन किया। ब्रह्माकुमारीज़ जयपुर सबज़ोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी ने भी अपने प्रेरणादायी विचार रखे। कार्यक्रम में हज़ारों लोगों ने मेडिटेशन भी किया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th May, 2025
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org